ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

অইল কিৰণ OIL KIRAN | 2021 | वर्ष 18 अंक 29 |

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सम्पादकीय

ऑयल इंडिया लिमिटेड की गृह पत्रिका "ऑयल किरण" की गौरवशाली विकास यात्रा गत 18 वर्षों से सतत रूप से जारी है। इस छमाही गृह पत्रिका के प्रस्तुत अंक को आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है, जिसका श्रेय आप सभी को जाता है। परिणाम स्वरूप हम और जोश व उत्साह के साथ आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। भाषा विचारों की सहज एवं सार्थक संवाहक है। भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है। भारत की राजभाषा हिंदी है और राजभाषा के रुप में हिंदी का विकास हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्रप्रेम को भी मजबूत बनाता है। हमारा उपक्रम अपने मूल कार्य कच्चे तेल का उत्पादन एवं परिवहन में जिस प्रकार आगे बढ़ रहा है उसी प्रकार हमलोग राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी अग्रसर है। ऑयल के सभी कार्यालयों में राजभाषा के कार्यों को सुचारू व नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। हमारी कम्पनी में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा।

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व होता है। ऑयल किरण न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन् ऑयल के सभी कार्यालयों में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहद प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच प्रदान करती है।

भाषा के प्रचार – प्रसार के अतिरिक्त इस पत्रिका को प्रकाशित करने का और एक उद्देश्य है हमारे बीच छिपी प्रतिभाओं को सामने लाना। पत्रिका के प्रकाशन को यथार्थ रूप देने वाले सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूं जिनके बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता। पत्रिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सलाहकार
श्री प्रशान्त बोरकाकोती, आवासी मुख्य कार्यपालक, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री राजीव कुमार बरा, मुख्य महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री अरुणज्योति बरुवा, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री त्रिदिब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

प्रधान सम्पादक
श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर
श्री दिगन्त डेका, हिन्दी अधिकारी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, पर्यवेक्षण सहायक (इजी -IV), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री विजय कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षण सहायक (इजी-I) पीजी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

ऑयल किरण
वर्ष - 18, अंक - 29

आवरण विषय
आजादी का अमृत महोत्सव

इस अंक में .....

जीवन	7
जिन्दगी तुम्हारे साथ !	7
फ़तह	8
वो चांद मेरा	9
मेरे राम	9
पिता	10
मेरा विचित्र मन	11
दहेज प्रथा	11
गौरवान्वित या उपेक्षित हिन्दी	12
स्वदेश प्रेम	13
टाइम ट्रेवल (समय-यात्रा)	14
इंसानियत कितनी है	15
अपरिचित का परिचयः बीना दास की कहानी	16
ऐसा मंदिर जहा बुलेट बाइक की पूजा होती है	18
सॉरी पापा, सॉरी मममी	19
बदल जाता है सब	21
कनाडा से काशी पहुंची अन्नपुर्णा	22
एक उम्मीद	23
क्या, अपना टाइम आयेगा ?	24
वर्क - ओवर गतिविधियां	26
स्वास्थय एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा स्वच्छता का अंतः सम्बन्ध	27
देश का पहला वित्तीय घोटाला और जौनपुर डोभी कनेक्सन	28
सत्यनिष्ठा के साथ भारत को आत्मनिर्भर बनाने में महिलाओं की भूमिका	29
ऑयल राजभाषा समाचार	**31-44**

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक सैकिया प्रिंटर्स, दुलियाजान, दूरभाष - 9435038425

प्रशांत बोरकाकोटी

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

आवासी मुख्य कार्यपालक
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

हमारी छमाही गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 18, अंक 29 आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी।

भाषा के बिना मानव जीवन निरर्थक है। भाषा ही सम्प्रेषण का माध्यम होता है। भारत में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा के रुप में सबसे अधिक स्वीकार की गई है। संस्कृत, सभी भारतीय भाषाओं की जननी है पर हिंदी इसके सबसे अधिक निकट है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड कच्चे तेल का अन्वेषण, उत्पादन तथा परिवहन एवं प्राकृतिक गैस का वितरण सुचारु रूप से करने के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के पूर्ण क्रियान्वयन के प्रति दृढ़ संकल्पित है। साथ ही, कंपनी द्वारा कार्यालय के कामकाजों में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास निरंतर रुप से किया जाता है। हम कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने और हिंदी का सकारात्मक वातावरण सृजन करने का प्रयास निरंतर करते रहते हैं।

"ऑयल किरण" के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

सस्नेह,

(प्रशांत बोरकाकोटी)

श्री राजीव कुमार बरा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

यह गौरव की बात है कि गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 18, अंक 29 प्रकाशित होने जा रहा है। आशा करता हूं कि इसमें प्रकाशित सभी रचनाएं, लेख, कविता आदि आप सभी के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

राष्ट्र की उन्नति में उस देश की भाषा और संस्कृति की अहम भूमिका होती है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी भाषा हमारे देश की जनता द्वारा सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग करना अनिवार्य है क्योंकि हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। ऑयल इंडिया लिमिटेड, नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता का कार्यभार कई वर्षों से निरंतर संभालते आ रही है। ऑयल अपने कार्मिकों के साथ-साथ नराकास, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकगणों को भी प्रशिक्षण और हिंदी माह समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने की सुविधा प्रदान करती है। इसके साथ ही वे हमारी गृह पत्रिका "ऑयल किरण" में भी अपने विचार, लेख, कविता व रचनाएं प्रकाशित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

मैं उन सभी को बधाई देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। "ऑयल किरण" के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आशा है कि ऑयल किरण के इस नवीनतम अंक से आप सभी लाभांवित होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(राजीव कुमार बरा)

अरुणज्योति बरूवा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

आप सभी के समक्ष हमारी छमाही गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का वर्ष 18, अंक 29 प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

हिंदी भाषा का प्रयोग अब पूरे भारत वर्ष में संपर्क भाषा के रूप में हो रहा है। हिंदी आज एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में भी उभर कर सामने आई है। ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा गृह पत्रिका "ऑयल किरण" का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि हमारे सभी कार्मिकगण हिंदी भाषा में कार्य करने के प्रति पूर्णरुपेण समर्पित हैं। हमारे कार्यालय में यथासंभव कार्य हिंदी भाषा में करने का प्रयास किए जाते हैं और राजभाषा संबंधि सभी नियमों का पूरी तरह से अनुपालन किया जाता है। हमारी कंपनी, राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। इसी के अंतर्गत "ऑयल किरण" का निरंतर प्रकाशन किया जाना भी राजभाषा हिंदी के विकास का ही एक हिस्सा है।

इस पत्रिका के प्रकाशन को यथार्थ रूप देने वाले सभी रचनाकारों का मैं आभार व्यक्त करता हूं जिनके बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता। मुझे उम्मीद है कि सभी कार्मिक "ऑयल किरण" के इस नवीतम अंक में प्रकाशित रचनाओं को पसंद करेंगे। अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमारा मार्गदर्शन अवश्य करें जिससे पत्रिका के आगामी अंक को और बेहतर बनाया जा सके।

"ऑयल किरण" पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों के सफल प्रयासों के लिए उन्हें हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(अरुणज्योति बरूवा)

त्रिदीब सैकिया

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

महाप्रबंधक (जन संपर्क) विभागाध्यक्ष
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

हमारी कंपनी द्वारा हिंदी की छमाही गृह पत्रिका ''ऑयल किरण'' का वर्ष 18, अंक 29 कलेवर और साजसज्जा के साथ प्रकाशित किए जाने पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

हमारे देश में लोगों के बीच विचारों का आदान-प्रदान के लिए सबसे बेहतर और आसान साधन हिन्दी भाषा ही है। भारत के संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में हमारी कंपनी अनवरत प्रयासरत रहती है। इसी कड़ी में हिंदी पत्रिका ऑयल किरण का प्रकाशन निरंतर करना भी इसी तथ्य को उजागर करता है। नियमित रुप से प्रकाशित होने वाली यह गृह पत्रिका इस बात का द्योतक है कि हम सभी कार्मिक हिंदी में कार्य करने के प्रति सदैव समर्पित हैं। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में हिंदी पत्रिकाएं निरंतर महत्वपूर्ण योगदान देती आ रही हैं। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों में रचनात्मकता बढ़ाने व राजभाषा हिंदी के प्रति प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों में रचनात्मकता बढ़ाने व राजभाषा हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने में पत्रिका ने बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है। दैनंदिन कार्य-व्यवहार में हम सभी को राजभाषा हिंदी के प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए। मेरा सभी कार्मिकों से आग्रह है कि वे अपना अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य मूल रूप से हिंदी में ही करने का प्रयास करें। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है।

मैं आशा करता हूं कि सभी पाठक "ऑयल किरण" के इस अंक में संकलित लेख अवश्य पसंद करेंगे। मुझे उम्मीद है कि "ऑयल किरण" आप सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। इसे और ज्ञानवर्धक, रोचक तथा बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित,

त्रिदीब सैकिया

(त्रिदीब सैकिया)

जीवन

✍रीवा कुमार
आश्रित -राकेश कुमार
महाप्रबन्धक (इन्डेग),
इन्डेग विभाग, दुलियाजान

जीवन क्या !!!!!!!!!!
सुमन में सुगंध,
सरिता में तरंग
इंद्रधनुष में रंग
बादल में बूँद
तन में धड़कन
और ऐसा ही बहुत कुछ !!!!!!!!!

यात्रा क्या !!!!!!!!!!
सुगंध का पवन से गुजरना
लहर का सागर से लिपटना
रंग का गगन में बिखरना
नयन का नयनों में थिरकना
शैशव का यौवन से निखरना |
और ऐसा ही बहुत कुछ !!!!!!!!!!

मिलन क्या !!!!!!!!!!!!
बूँद का धरा पे बरसना
भावों का अधरों से बिखरना
नयनों में मौन का ठहरना
जीवन से जीवन का समर्पण
और ऐसा ही बहुत कुछ !!!!!!!!! ❑

ज़िन्दगी, तुम्हारे साथ !

✍प्रतीक बरुआ
उप मुख्य अभियंता
कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

बात तुम से अधूरी है ...
इंतज़ार में हमारे तो बस बेसब्री है !

तुम में हमें दिलचस्पी है ...
तुम्हारी बेरुखी में तो सिर्फ और सिर्फ नाइंसाफी है !

बिन तुम्हारे हर तरफ मायूसी है ...
जुबां के हर लफ़्ज़ में सिर्फ दर्द भरी शायरी है !

अगर तुम्हारी कोई मजबूरी है ...
तो हमारी भी ज़िद पूरी है !

मंजूरी अगर तुम्हारी है ...
तो हमारी तकदीरें जुड़ी है !

सच्चे दोस्तों की हमदर्दी है ...
फिर भी प्यार की राह खुरदरी है !

दिलों को जो जकड़े ऐसी कौन सी चार दिवारी है ?
पाक इरादों को लेकिन लिहाज भी तो जरूरी है !

हर मौकापरस्त के हाथ में धोखे की चूड़ी है ...
अंधा ऐतबार ना करना दुनिया बहुत बुरी है !

शायद आज हम दोनों में रिवाजों से दूरी है ...
पर जज़्बा हो सलामत तो किस्मत में ऊँचाई है !

रूठे चाहे दुनिया मगर जिंदगी हम दोनों को बनानी है...
मिलकर चलेंगे साथ तो हर मंजिल सुहानी है !

गम मिले या चैन सब तजुर्बे की निशानी है !
हर अंधेरी रात हमें सुबह के सपने देख कर गुजारनी है !!!❑

फ़तह

✍ **मो. सैफी रियाज**
वरिष्ठ अधिकारी
मानव संसाधन - स्थापना विभाग, दुलियाजान

एक मीठी ठहराव ने दस्तक दी है
ना जाने कितनी रातें गुज़र चुकीं
उस संघर्ष की उड़ान में
जिस पर चादर ओढ़े, नींद को धोखा दिया
दूर कहीं उस आस की चाह में
जिसमें ना सुकून थी, ना नर्मी !

बेरोज़गारी एक ठण्ड पैदा करती है
ऐसी ठण्ड, जिससे बदन काँप जाए
धड़कन भी अपनी धमक में
ऐसी उफ़ान भरती हो
की वो मंज़िल और धुंधली कर दे
आँखें ऐसी जैसे समन्दर का ठहराव
एक ही वक्त पर उम्मीदी एक ही वक्त पर ना-उम्मीदी
कोई हमसे पूछो !

हमने देखी है !
अस्तित्व को जंग की लपट में
जब धीरे-धीरे, एक-एक कर
सारे अरमान ऐसे क़ुरबान करें
जैसे उस ज़ंग को ईंधन दे रहा हो !
वो यायावर है
उसे मंज़िल नाक़ाबिल-ए-हुसूल दिखती है
बावजूद... !
उन अनगिनत बाधाँओं को चीर कर
एक योद्धा खड़ा उठता है
जब संघर्ष को तूफ़ान बनाकर
उन सर्द ख़्यालों से लड़-उठकर
उस कम्पन को अपनी ताकत बनाकर
अपने सख्त इरादों से
आँखों के गहरे समन्दर को
आग की लपट बनाता है !

फिर वो धुंधली सी आस
मानो उस लपट से चमक उठी हो
अब इस योद्धा से कोई टकरा नहीं सकता
जद्दो-जहद की आग में जलकर
संकल्प मानो लोहे सी मजबूत
किला तो फ़तह होना ही था !

अब इस ठहराव में
अस्तित्व के वो ज़ंग भी साफ़ होंगे
ज़िंदा हो उठेंगे सारे वो अरमान
ज़िन्दगी के उस जंग में जो शहीद हुए थे ! ❑

"आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, लेकिन अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका फ्यूचर बदल देंगी।"

- ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

वो चांद मेरा

✍ **मोनिका मीना**
वरिष्ठ अभियंता
ओजीपीएस विभाग, दुलियाजान

ना जाने कितनी रातें मैंने,
उस चांद को निहारते हुए गुजारी है|

जिस शिद्दत से मैंने चांद को चाहा है,
उसकी रोशनी चुराने का इल्ज़ाम,
बेशक मुझ पर ही आएगा|

उस चांद को मैं 'मेरा चांद' कहती थी,
वो भी तो कुछ इस अंदाज से,
मुझ पर अपनी रोशनी लुटाता था|

इतनी बातें, किस्से और मेरे मन की असमंजसे,
मेरी कल्पनाएं सब तो बताई है मैंने उसे,
वो भी तो इतने इत्मिनान से सुनता था,
मानो मेरे सिवा कोई काम ही ना हो उसे|

मुझ जैसी मनचली को इस तरह से समझाता था वो,
कि पता नहीं कब उसकी सुकूनभरी बातें मुझे,
काल्पनिकता से वास्तविकता में ले आती थी|

उसकी वो अठखेलियां जिन पर मैं,
हंसती रह जाती थी,
और उसकी वो मंद सी मुस्कुराहट,
मुझे फिर से उसका कायल बना देती थी|

मैं अब भी सोचती हूं कि,
काश कभी वो चांद मेरा,
इस जमीं पर उतरे सिर्फ मेरे लिए|| ❑

मेरे राम

✍ **आयुष सोमानी**
सामग्री विभाग,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

कहलाते हैं वे श्री नारायण के अवतार,
करते हैं सदा अपने भक्तों का उद्धार।

जगदीश्वर हैं वे; संकट से देते हैं तार,
उनकी इच्छा के बिन ना चले यह संसार।

दुष्ट-दमन करे या रखे संतों की लाज,
यही तो है उनका परम धर्म व काज।

माता कौशल्या व पिता दशरथ के दुलारे,
हैं सदा अपनी प्रजा की आंखों के तारे।

अवध है उनका राज्य; अयोध्या उनका धाम,
उनके पावन नाम से फलते वांछित काम।

धनुष-बाण को सदा करते हैं वे धारण,
वो तो हैं समस्त कारणों के भी कारण।

लक्ष्मण के हैं वे भाई, हनुमंत के वे प्रभु,
उनके नाम जपन से संकट हो जाते लघु।

सुबह शुरू हो जिनसे, खत्म हो जिनसे शाम,
सिया के होठों पर रहता सदा ही उनका नाम।

जिनको भजने से मन को मिलता है आराम,
ऐसे हैं परम दयालु; परम कृपालु: मेरे राम। ❑

पिता

✍ **रोहित वशिष्ठ**
वरिष्ठ अधिकारी, जी. एम. एस विभाग
दुलियाजान

दिन भर धूप में जलता है,
कितनी रात खुद को जगाता है।
सबका पेट भरने के बाद,
वो खुद ठंडा खाता है।
खुद के लिए सोचना,
गुनाह है उसके लिए,
वो अपने घर के लिए कमाता है।
हर घर में होता है इक फरिश्ता,
वो इंसान पिता कहलाता है ।।

हारता नहीं कभी मुश्किलों से,
ना कभी घबराता है।
समेट लेता है सब दुख दर्द अपने अंदर,
बाहर कभी न कुछ दिखाता है।
आती है कभी काली घटाएँ,
या अंधेरा कभी डराता है,
खुद को जला, दिया सा बन
ये परिवार अपना बचाता है,
हर घर में होता है एक फरिश्ता,
ये इंसान पिता कहलाता है ।।
चाहे उमर उसकी ढल रही हो,
या नजरें थोड़ी धुंधला गयी हो,
पर तुम्हें राह मंजिल की दिखाता है।
साया भी हो जाता है पराया छांव में,
पर बाप हर मंजर में साथ निभाता है।
इक लंबा सफर तय किया है उसने,
तुम्हें पाठ जिंदगी का पढ़ाता है।
सीढ़ी बनता है तुम्हारी कामयाबी में,
तुम्हें गिरने से बचाता है।
रखता है तुम्हें सर सजाके,
वो खुद ठोकरें खाता है।
हर घर में होता है इक फरिश्ता,
ये इंसान पिता कहलाता है ।।

चाहता नहीं है तुमसे कुछ भी,
वो बस तुम्हें देख इतराता है।
तुममें रूह बसती है उसकी,
कहने में थोड़ा हिचकिचाता है।
कभी तुम भी उनसे थोड़ा बतला दिया करो,
प्यार करता हूँ मैं आपसे बहुत कहके,
गले लगा लिया करो।
प्यार-इज्जत का थोड़ा भूखा है वो,
और न तुमसे कुछ चाहता है।
अपनी हर सांस में,
वो खैरियत तुम्हारी सज़ाता है।
हर घर में होता है इक फरिश्ता,
ये इंसान पिता कहलाता है ।। ❑

**'' मेहनत करने से गरीबी नहीं रहती,
धर्म करने से पाप नहीं रहता और मौन रहने से कलह नहीं होता।''**

मेरा विचित्र मन

✍ **सुनील बिश्नोई**
अधीक्षण अभियंता
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

आज एक शपथ लेता हूँ, मेरे विचित्र मन की फिर से सुन लेता हूँ।
जीवन के हर डगर पर, सच्चाई को फिर से चुन लेता हूँ।।
हालाँकि समाज में नाम कमाना है, पर ईमानदारी को नहीं गवाना है।
जीवन के इस विशाल पथ को, न्याय और विश्वास से ही सजाना है ।।
आज एक शपथ लेता हूँ, मेरे विचित्र मन की फिर से सुन लेता हूँ।
जीवन के हर डगर पर, सच्चाई को फिर से चुन लेता हूँ।।

कहते हैं लोग, एक अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा।
पर विचित्र मन कहता है, सच्चाई को चुन, फिर तू जरूर न्याय जोड़ेगा।।
आज एक शपथ लेता हूँ, मेरे विचित्र मन की फिर से सुन लेता हूँ।
जीवन के हर डगर पर, सच्चाई को फिर से चुन लेता हूँ।।

हे आदमी तू खुद पे और खुदा पे विश्वास रख, फिर तुझे हरा नहीं सकता अन्याय लाख ।
आज इस विचित्र मन की सुनकर, चल पड़ इस पारदर्शिता के पथ पर।।
आज एक शपथ लेता हूँ, मेरे विचित्र मन की फिर से सुन लेता हूँ।
जीवन के हर डगर पर, सच्चाई को फिर से चुन लेता हूँ।। ❑

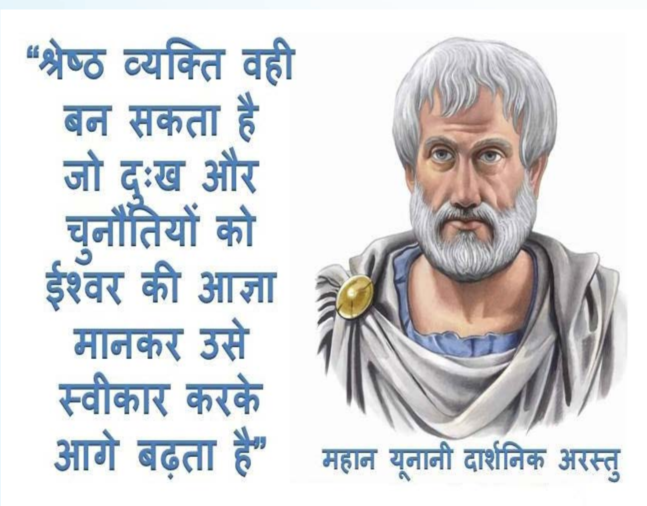

दहेज प्रथा

✍ **ऋतु कुमारी**
कनिष्ठ सहायक, योजना विभाग
निगमित कार्यालय, नोएडा

जब एक ही उल्लू काफी था, बर्बाद ए गुलिस्ता करने को,
हर शाख पे उल्लू बैठा है तो अंजाम ए गुलिस्ता क्या होगा ।।

दहेज नहीं डाकाजनी है कहते हैं जिसको दहेज।
मेरे प्यारे दोस्तों रखना तुम इसका परहेज।।

सास-बहू की बनती अच्छी, यदि दहेज बहुत लाई।
यदि तनिक सी कमी रही तो होती रहती सदा लड़ाई।।

प्रतिदिन पढ़ते अखबारों में, दुःखभरी घटना भयानक।
ससुराल में फटा स्टोप, जलमरी एक बहू अचानक।।

कितनों को काट खाया है इसने, कितनों को और खाएगा।
आज हमारा नम्बर आया है, कल तुम्हारा भी आएगा।।

जब तक होती सगाई की बात, तब तक होती मीठी चर्चा।
जब बात होती शादी की भेजा जाता दहेज का पर्चा।।

संगीन सजा चाहिए है उनको, जो माँगते हैं दहेज,
मेरे प्यारे दोस्तों रखना तुम इसका परहेज।।

कौन कूद गयी कुँए में, कौन गिरी मिनारों से।
कौन गिनेगा इनकी गिनती, रोज रंगे अखबारों में।।

न जाने कितनी सीता गंगा माँ की गोदी में सो जाती है।
न जाने कितनी गीता रेल की पटरी पर लहू हो जाती है।।

ओ धर्म बेचने वालों, ओ कर्म बेचने वालों।
क्यों करते हो जिंदा मरे हुए चंगेज को।
सोने की हथकड़ियाँ काट दो, मारो दुष्ट दहेज को।

दहेज एक कोढ़ है, जिसे हमने स्वंय लगाया है,
स्वंय ही इसे दूर करेंगे तब समझो जंग में जीवन पाया है।।
❑

गौरवान्वित या उपेक्षित हिंदी

✍ **निधि रानी**
आश्रित - रंजीत कुमार महतो
प्रबंधक (सुरक्षा), सुरक्षा विभाग
दुलियाजान

भारत देश की भाषा हिंदी,
सुंदरता में चार-चाँद लगाने वाली,
हमारे देश के माथे की एक बिंदी,
करोड़ों जुबान पर बसने वाली,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी बहने वाली,
हमारी अपनी भाषा हिंदी।

वर्षों पहले आई एक बिमारी,
विदेशी जिसे संग अपने थे लाए,
हम भारतीय उसकी चपेट में आए,
अंग्रेजियत को हम लगे अपनाने,
हिंदी को हम लगे दूर भगाने।

जो हिंदी गौरव से थी भरपूर,
आज हुई वह लाचार मजबूर,
सीना- तानकर जो थी चलती,
अपने ही घर में अब उपेक्षित होती,
धीरे- धीरे अपनों से दूर होती,
हमारी अपनी भाषा हिंदी।

नकलवाद ने घेरा हम सबको,
पश्चिमी-सभ्यता के रंग में ढलकर,
जटिलताओं से भरी अधूरी अंग्रेजी को अपनाकर,
शब्दों-अर्थों से परिपूर्ण हिंदी को त्यागकर,
अपनी मातृभाषा का स्तर चले गिराने।

तानकर सीना अंग्रेजी कहती,
देख तू अपनी दशा ऐ हिंदी,
अपनाकर मुझे इतराते तेरे लोग,
जुबान का तेरी करते जो उपयोग,
बनते हैं वे उपेक्षा-उपहास का पात्र,
मायूसी बचती उनके पास फिर मात्र।

सुधरेगी कैसे भला तेरी दशा हिंदी,
फल-फूल रही हूँ मैं तो यहीं;
तुम्हारे ही घर-आँगन में,
जगह तुम्हारी मैं हूँ ले रही,
सारी तवज्जो मुझे मिल रही।

हिंदी चुपचाप खामोश रहकर,
गुमनाम होती जा रही कहीं,
गिने-चुने लोग बचे हैं अब भी,
दामन उसका जिन्होंने मजबूती से है पकड़ा,
किंतु कैसे बच पाएगी हमारी हिंदी,
अंग्रेजी भी अब जा रही है उसमें घुलती।

एक डोर से बांधे रखती थी सबको,
आज वही है कैसे टुकड़ों में बँटी,
एक-एक अल्फाज अर्थों के साथ,
डेरा डाले बस जाती थी हृदय में,
जाने कहाँ खो रही अब पहचान वह अपनी।

दम घोंट रही है हिंदी अपनी,
अंतिम-क्षण जैसे उसकी आ रही,
जर्जर होकर हुई वह बेसहारा,
काम न आ रही मुट्ठी भर लोगों की दुआ,
गौरव खोकर, उपेक्षित होकर,
अंतिम सांस ले रही हमारी हिंदी।

हिंदी को है अगर बचाना,
तो शिक्षा नीति में बदलाव है लाना,
हिंदी से ही दिन की शुरूआत करना,
तभी फलेगी, फूलेगी, खिलेगी,
और पहले की तरह मुस्कुरायेगी हिंदी। ❑

स्वदेश प्रेम

✍ ऋतु कुमारी
कनिष्ठ सहायक, योजना विभाग
निगमित कार्यालय, नोएडा

जिस को न निज गौरव, निज देश का कुछ ध्यान नहीं,
वह नर नहीं, नर पशु निरा है, और मृतक समान है ।।

सदियों की गुलामी के बाद भारतवासियों ने जब 15 अगस्त 1947 का शुभ प्रभात देखा तो वे गुलाम न थे। यह दिन बड़े ही संघर्ष से, बलिदान से निरंतर किए गए प्रयत्न से प्राप्त किया गया। 14 अगस्त की अर्धरात्रि को भारत स्वतंत्र हुआ और 15 अगस्त का सूर्य नवीन खुशियों, योजनाओं, उमंगों, आशाओं को लेकर आया। पराधीनता की सुदृढ़ जंजीरों ने भारत को खोखला कर दिया था। आर्थिक रूप से इतना शोषण हुआ कि स्वयं कुछ कर पाना असंभव लग रहा था। लेकिन इस स्वतंत्रता की किरण ने जीवन में उल्लास व जोश भर दिया कि प्रगति के समस्त रास्ते खुले नजर आने लगे। यह वह शुभ दिन है जिसकी आकांक्षा हमारे पूर्वजों ने, हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और हमारे शहीदों ने की थी। उनके अथक प्रयास से भारतीय नागरिकों के जीवन में नव प्रभात आया । हमारे प्राणों, आहुतियों का परिणाम 15 अगस्त, गुलामी के घने बादलों को चीरकर आया स्वर्णिम प्रभात 15 अगस्त 1947।

जिस गांव या शहर में हमारा जन्म होता है और जिस जगह हमारा बचपन बिता होता है। उस प्यारी जन्मभूमि, प्यारे देश के प्रति श्रद्धा और आदर की भावना कैसे न रखें यह कैसे संभव है। वेद पुराणों में अंकित है। पृथ्वी मेरी माँ है और मैं उसका पुत्र । इसलिए प्रत्येक देशवासी का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने देश के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना रखे।

एक बार की बात है, एक यात्री किसी जंगल में से गुजर रहा था, वहाँ एक पेड़ पर आग लगी हुई थी और पक्षी उस पर बैठे हुए थे । यात्री ने पक्षियों को संबोधित करते हुए कहा, आग लगी इस पेड़ को जल-जल गिरते पात, अरे पक्षियों उड़ क्यों नहीं जाते, जब पंख तुम्हारे साथ। यात्री की बात सुनकर पक्षियों ने कितना सुंदर प्रेम का उदाहरण दिया फल खाये हैं इसी पेड़ के गंदे किए हैं पात, यही हमारा धर्म है जलमरे इसी के साथ। जब पक्षियों को अपने स्थान के प्रति इतना प्रेम है तो मनुष्य सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण भला देश-प्रेम की भावना से कैसे वंचित रह सकता है। सच्चा देशभक्त वही होता है जो देश के लिए जिता है और देश के लिए मरता है और जब भी इस पर संकट आता है अपना सबकुछ न्यौछावर कर देता है।

"अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जान केनेडी ने अपेन देशवासियों को प्रेरित करते हुए जो शब्द कहे हैं, वो केवल सुनने योग्य ही नहीं बल्कि स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य है। उन्होंने कहा था.....

"तुम यह मत पूछो कि देश ने तुम्हारे लिए क्या किया, बल्कि अपने आप से यह पूछो कि तुमने तुम्हारे देश के लिए क्या किया है।"

भारत में देशभक्त वीर पुरुषों और वीरांगनाओं की कमी नहीं रही। समय-समय पर अनेक देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति देकर हंसते – हंसते फाँसी के तख्तों पर झूल गये। राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह, महात्मा गांधी, रानीलक्ष्मीबाई, सुभाषचंद्र बोस आदि अनेक भक्तों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। सुभाष चंद्र बोस आजाद हिंद फौज की स्थापना की। उनका नारा था।

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूँगा ।"

इसी प्रकार पंडित जवाहरलाल नेहरु प्रायः कहा करते थे -"यदि हमारा भारतवर्ष सुरक्षित है तो हमारा कौन विनाश कर सकता है और यदि हमारे भारतवर्ष का विनाश हो गया तो भला हमें कौन सुरक्षित रख सकता है।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है –

'शहीदों की चिता पर लगे हर वर्ष मेले ।
वतन की राहों पर मिटने वाले का बाकी यही निशा होगा।।
भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वो पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।
जय हिंद, जय भारत ❑

टाइम ट्रेवल (समय-यात्रा)

✍ **नैना जोशी**
आश्रित - रितेश मोहन जोशी
उप महाप्रबंधक (भू-भौतिकी)
के.जी. बेसिन, काकीनाड़ा

लंदन में एक 11 वर्षीय लड़की जिसका नाम बोनिता है, मशहूर लेखक एच.जी. वेल्स की टाइम मशीन नामक पुस्तक पढ़ रही थी। इस पुस्तक ने बोनिता को आश्चर्यचकित कर दिया कि क्या वास्तव में समय-यात्रा (टाइम ट्रेवल) संभव हो सकती है? तभी उसकी माँ उसके कमरे में आई और कहा, "बेटी! लाइट बंद करो, सोने का समय हो गया है, अच्छी तरह से सो जाओ, शुभ रात्रि," और ऐसा कहकर उसकी माँ उसके कमरे से बाहर चली गयी। फिर बोनिता तकिये में सर रखा और तुरंत ही उसे नींद आ गयी। आधी रात को बोनिता को प्यास लगी और वह पानी लेने के लिए उठी। ठंडी बर्फ की अलमारी (फ्रिज) से पानी लेकर जैसे ही वह लौट रही थी, उसकी नज़र साइड वाली मेज पर रखी हुई किताब पर पड़ी। उसने जो देखा उसे देखकर वह बड़ा आश्चर्य हुआ और वह धम्म से अपने बिस्तर पर बैठ गयी। फिर अचानक वह किताब चमकने लगी। वह चकित थी ये सब क्या हो रहा है। अपने संशय को मिटाने के लिए पहले उसने खुद को चिन्गोटी काटी और फिर उसने किताब को छुआ। ऐसा करते ही कुछ रंग बिरंगी रोशनी निकली और कुछ अजीब सी आवाजें निकली और उसने अपने आप को किसी बड़ी सी चीज़ के अंदर खड़ी पायी, जिसके चारों ओर विभिन्न रंगों की किरणें थी। उसने 10 सेकंड तक इंतजार किया कि कहीं ये कोई मायाजाल तो नहीं? पर गौर से देखने पे उसने खुद को कुएं जैसी चीज़ के बीच में पायी। बोनिता के समझ में कुछ नहीं आ रहा था। लेकिन चारों ओर देखने के बाद उसे एक चीज़ का एहसास हुआ कि यह एक टाइम मशीन (समय यन्त्र) है और सबसे बड़ी बात कि वह उसके नियंत्रण में है। वह जानती थी इसके उपयोग से आप समय से पीछे जा सकते हैं लेकिन कभी सोचा नहीं कि अगर मौका मिले तो कहां जा सकते हैं। वह अब सोचने लगी कि उसे समय से पीछे कहाँ जाना चाहिए?, "क्या मुझे जर्मनी जाना चाहिए? नहीं, अमेरिका? शायद अगली बार, ओह! मुझे पता है, मुझे सेशेल्स जाना चाहिए, क्योंकि सेशेल्स डूब रहा है! मैं सेशेल्स को बचाने के लिए समय से पीछे जा सकती हूँ। बोनिता ने उत्साह से कहा। "मैं समय से इतना पीछे जाना चाहती हूँ, जब सेशेल्स द्वीप, अफ्रीका, भारत और मेडागास्कर सब एकसाथ थे, जब दुनिया एक थी, नाम पैंजिया था। फिर मेडागास्कर, भारत से अलग हो गया और सेशेल्स और भारत उत्तर दिशा में चले गए और फिर अंत में सेशेल्स भारत से अलग हो गया। बोनिता ने सोचा, "तो अगर मैं सेशेल्स को अभी से अलग होने से बचाऊं तो कैसा रहेगा?" बोनिता ने सोचा और सोचा और फिर अंत में उसे एक उत्तर मिला, "मुझे पता है कि मुझे भारत और सेशेल्स को अलग होने से रोकना होगा या कम से कम अलग होने में देरी करनी होगी, ताकि मुझे समय मिले, ताकि मैं लोगों को जागरूक कर सकूं कि सेशेल्स को डूबने से कैसे रोका जाए। भविष्य में होने वाले पर्यावरण के नुकसान को कम करने के लिए, मुझे लगता है कि मुझे कई हजार साल पहले जाना चाहिए जब मानव सभ्यता थी और सेशेल्स और भारत अलग होने वाले थे।" बोनिता ने संख्याओं को समायोजित किया और एंटर बटन दबाया, वह वास्तव में यह देखने के लिए उत्साहित थी कि क्या होगा लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। फिर उसने टाइम मशीन का दरवाजा खोला और अचानक देखा कि वह एक जंगल के बीच में है। हरा भरा जंगल, जानवरों से भरा हुआ, बगल में साफ़ पानी की नदी, सामने बर्फ के पहाड़; यह सब देख के उसके आँखों से आंसू निकल पड़े। उसे लगा कि जागरूकता ना होने की वजह से यहाँ के लोगों ने ये सब खो दिया। उसने सोचा, जनता को जागरूक करने के लिए, वो वह सब लिखे जिसके कारण जलवायु परिवर्तन होगा और सेशेल्स डूबेगा। उसने सोचा कि अगर इस तरह लोगों को जागरूक किया जाए, जैसे कि: कोयला नहीं जलाये, जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम करें, पेड़ नहीं काटे, पानी बर्बाद ना करे, पेड़ लगाए आदि। बोनिता ठीक से जानती थी कि इन युक्तियों के बारे में कैसे प्रचार किया जाए। समय से इतने पीछे जा चुके थे कि दूरध्वनी यन्त्र क्या रेडियो आदि भी प्रचलन में नहीं थे एक बाज़ार था जहाँ लोग अपनी दैनिक ज़रूरत की चीज़ें खरीदते थे। उसने किसी तरह वहाँ जाने का रास्ता खोज लिया और उसे एक दैनिक घोषणा पटल

मिला और उसने अपना सन्देश वहाँ चिपका दिया। इस तरह के और भी सार्वजनिक स्थलों पर उसने इन संदेशों को चिपकवाया जिसे बहुत सारे लोगों ने पढ़ा। इन युक्तियों के बारे में खबर "जंगल की आग" की तरह फैल गई। बोनिता समय से थोड़ा आगे गयी और उसने देखा कि लोगों ने वास्तव में इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करना शुरू कर दिया। बोनिता ने महसूस किया कि सब ठीक हो गया है, अब सेशेल्स इक्कीसवीं सदी में नहीं डूबेगा, अब घर जाने का समय हो गया है। उसने अपने समय यन्त्र में 2021 का आंकड़ा दबाया और उसने पाया कि कुछ ही समय में वह 2021 में प्रवेश कर गई है। बहुत जल्द वह अपने कमरे में पहुंच गयी और उसने देखा कि घड़ी में अभी सिर्फ रात के दो बजे हैं, लेकिन बीता हुआ समय मानों कई दिनों की तरह लग रहा था। बोनिता को एहसास हुआ कि उसके पास सोने के लिए और भी घंटे हैं, वह उन्हें क्यों बर्बाद करेगी और इसलिए वह सोने के लिए चली गई। सुबह बोनिता ने अपने बिस्तर से उठी और नाश्ते के लिए नीचे चली गई। उसकी माँ ने उसका अभिवादन किया, "अरे प्रिये, तुम कैसी हो? आशा करते हैं कि आपकी रात की नींद अच्छी थी, हम सिर्फ इस बारे में चर्चा कर रहे थे कि हमें अपनी गर्मी की छुट्टी के लिए कहाँ जाना चाहिए"। उसके पिता ने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि हमें मेडागास्कर या सेशेल्स जाना चाहिए यह एक सुंदर जगह है"। "यह एक अच्छा विचार है" बोनिता की माताश्री ने अपने तस्तरी में रखी पूरी को कुतरते हुए कहा और फिर उसी सांस में पूछा "क्या सेशेल्स डूब नहीं रहा है?" बोनिता ने जवाब दिया, "आप क्या कह रहे हैं, सेशेल्स एकदम सही सलामत है। "उसकी माँ ने चौंकते हुए कहा, "तुम तो ऐसे कह रही हो जैसे अभी-अभी इतिहास बदल के आयी हो?" बोनिता ने कचौरी को मुँह में ठूसते हुए बुदबुदाया, "इतिहास ही तो बदल के आ रही हूँ मैं माँ ।" बोनिता के पिताजी ने पूछा, "बेटी तुमने कुछ कहा"? "नहीं, बस यही कि माँ के हाथ की कचौरी स्वाद होती है जब मैं उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्रावास में रहूंगी तो काफी याद करुँगी " बोनिता ने उत्तर दिया। ❑

इंसानियत कितनी है

✍ **श्रीमती प्रणामी गोहांई**
वरिष्ठ सहायक-I
आंतरिक लेखा परीक्षा विभाग, दुलियाजान

असम में बैसाख महीने की संक्रांति से असमिया के अति प्रिय रंगाली बिहू या बोहाग बिहू शुरू हो जाता है। बिहू के दौरान लोगों के दिलों में भी हलचल मचलने लगती है। लोग तरह – तरह के पकवान बनाते हैं। इस त्यौहार में लोग एक दूसरे को कपड़े भेंट करके प्यार और सम्मान जताते हैं। यही अवसर था जब मैं और मेरा बेटा बाज़ार जा रहे थे। बस से जब नीचे उतरे तो टेम्पो का इंतज़ार कर रहे थे, काफी देर हो गयी थी पर उस तरफ जाने को कोई तैयार नहीं था। तभी कुछ देर और सोचा कि इंतज़ार कर लिया जाए , इंतज़ार चल रहा था कि एक छोटा लड़का कुछ खाने को मांग रहा था पर कोई कुछ भी देने को तैयार नहीं था। हम सभी को ऐसा ही लगता है कि ये ऐसे ही मांगते रहते हैं पर हर बार ऐसा नहीं होता है। दूर से सब कुछ दिखाई दे रहा था कि लड़का बारी-बारी से सभी के पास जा रहा था पर कोई भी कुछ नहीं दे रहा था। तभी एक कार वहां आकर रुकी, उस लड़के ने कार वाले से कुछ मांगा पर अंदर से उसने एक खाली लिफाफा फेंका, उसमें लग नहीं रहा था कुछ होगा। लड़के ने उसे उठाया और वहां से चला गया। कुछ दूरी पर जाकर उसने देखा कि उसमें कुछ नहीं था, उससे कुछ ही दूरी पर मेरा बेटा यह सब देख रहा था कि लड़का बहुत ही भूखा है, उसने अपने खाने में से लड़के को कुछ खाने के लिए निकाल दिया और वह लड़का खाने लगा ....

आपको क्या लगता है की इसमें ऐसा क्या है जो आपको समझ में आया, साफ़ दिखाई देता है कि अगर इंसान सिर्फ अमीर है तो उसके पास कुछ नहीं है और अगर उसमें इंसानियत है तो उसके पास सब कुछ है .... ❑

> "खुद पर काबू पा लेना ही मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण जीत होती है।"
> - प्लेटो

"अपरिचित का परिचय: बीना दास की कहानी"

✍ **कुमार शाल्व रघुवंशी,** *वरिष्ठ विधि अधिकारी*
निगमित कार्यालय, नोएडा

✍ **हिमांगी सिंह,** *सलाहकार*
शिक्षा मंत्रालय

2021, वह वर्ष जब भारत अपना 75वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है और भारतीय स्वतंत्रता और स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई के बारे में बात कर रहा है। हमारी आंतरिक अंतरात्मा हमेशा गांधी जी, नेहरू जी, लाल, बाल और पाल की तिकड़ी जैसे कुछ महान नेताओं की कल्पना करती है, जिन्होंने भारत को अंग्रेजों के शासन से मुक्त करने के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। इतिहास उस समय की महान महिलाओं की भूमिका को भी स्वीकार करता है जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और नाना प्रकार की जिम्मेदारी संभाली। फिर भी, कई और क्रांतिकारी हैं जिन्होंने भारत माता के लिए अपने वसंतकाल का वादा किया, वे इतिहास की किताबों में सिर्फ छिपे ही नहीं हैं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जाने भी नहीं जाते हैं, जिन्हें आम तौर पर "अनसंग हीरोज" कहा जाता है और उनमें से एक कहानी पश्चिम बंगाल की बीना दास- अग्निकन्या की है। दुर्भाग्य से हमारे लिए, ऐसे कई बीना दास हैं और हम उनके नाम कभी नहीं जान पाएंगे या उन्हें उन लोगों की सूची में नहीं देख पाएंगे जिन्होंने हमारी आजादी के लिए लड़ाई लड़ी।

08 फरवरी, 1932 को, तत्कालीन प्रसिद्ध समाचार पत्र, ग्लासगो हेराल्ड ने रिपोर्ट किया, "गवर्नर पर पांच गोलियां चलाई गई", यह आगे पढ़ा कि, कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक स्नातक छात्र ने बंगाल के गवर्नर सर स्टेनली जैक्सन पर करीब से पांच गोलियां चलाईं, जब वह विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। बीना दास ने अपना गुनाह कबूल कर लिया और उसे उसके कृत्य के लिए नौ साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। उन्होंने कहा, "मैंने अपने देश के प्रति प्यार से प्रेरित होकर राज्यपाल पर गोली चलाई, जो दमित है। मैं सभी को आश्वस्त कर सकती हूं कि राज्यपाल के खिलाफ मेरी कोई व्यक्तिगत भावना नहीं है। एक महिला के रूप में वह मेरे पिता के समान ही अच्छे हैं, लेकिन बंगाल के राज्यपाल के रूप में वह एक ऐसी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने मेरे देश के 3 करोड़ पुरुषों और महिलाओं को गुलाम बना रखा है।

एक ब्रह्म शिक्षक और एक सामाजिक कार्यकर्ता की बेटी बीना दास, छत्री संघ (महिला छात्र संघ) की सदस्य थीं। छत्री संघ ने क्रांतिकारी शख्सियत बनने के लिए कौशल के साथ भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित महिलाओं को लैस करने की भूमिका निभाई। यह इतना अपरिचित कृति ने बीना दास को ब्रिटिश राज के खिलाफ हथियार रखने वाली पहली महिला बनकर इतिहास रच दिया और कई युवा महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। बीना दास के परिवार में भी क्रांतिकारी लोग शामिल थे। उनकी मां सरला देवी ने स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित एक छात्रावास की स्थापना की और पिता प्रोफेसर बेनी माधब दास ने सुभाष चंद्र बोस सहित उनके छात्र के रूप में भारत की स्वतंत्रता के लिए कई छात्रों को प्रेरित किया। बीना की बड़ी बहन कल्याणी दास भी खुद एक स्वतंत्रता सेनानी थीं। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि उन्हें अपने परिवार से क्रांतिकारी प्रवृत्ति विरासत में मिली थी।

बीना, अपनी छोटी उम्र से ही अंग्रेजों के अत्याचारों को सुनती रही और अपने अंदर अत्याचारों के खिलाफ भारत की रक्षा करने का जोश जगाया। उनके संस्मरण में, एक घटना को याद किया जाता है, जब वह एक स्कूल की छात्रा थी, "एक दिन हमने सुना कि ब्रिटिश वायसराय की पत्नी हमारे स्कूल का दौरा करने आ रही थी। उसके एक दिन पहले हमें स्वागत के कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास करने के लिए कक्षा से बुलाया गया था," " हमें कहा गया था कि हमें फूलों की टोकरियाँ लानी होंगी और परिसर में प्रवेश करते ही उनके चरणों में फूल बिखेरने होंगे। मैं इस विचार से विद्रोह कर गयी और पूर्वाभ्यास से बाहर चली गयी । योजना बहुत अपमानजनक थी। मैं आंखों में आंसू लिए कक्षा के कोने में चुपचाप बैठ गयी । दो अन्य लड़कियां भी बाहर चली गईं और मेरे साथ हो गईं।

आजादी के अपने संघर्ष की यात्रा में वे कई दल में शामिल हुईं और कई स्वतंत्रता आंदोलनों का हिस्सा बनीं। 1942 में, उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और 1942 से 1945 तक फिर से जेल में रहीं। दास और उनके समकालीनों को प्रसिद्ध टैगलाइन "करेंगे या मरेंगे", "करो या मरो" से प्रेरित किया गया और इस मंत्र ने बंगाल की युवा पीढ़ियों को स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ उनकी पहली जीत साइमन कमीशन के खिलाफ छात्रों का विरोध और कॉलेज की मांगों को मानने से इनकार करना था, जिसके कारण अंततः "दबंग अंग्रेज" ने सेवा से इस्तीफा दे दिया और संस्थान छोड़ दिया। 1947 में, दास ने एक साथी स्वतंत्रता सेनानी जतीश भौमिक से शादी की और स्वतंत्रता तक अपनी सक्रियता जारी रखी।

वह 1947 में बंगाल प्रांतीय विधान सभा और पश्चिम बंगाल विधान सभा की सदस्य भी थीं। 1960 में, उन्हें "सामाजिक कार्य" के लिए पद्मश्री पुरस्कार मिला। उनकी धार्मिक मान्यताएँ और नैतिकता, राजनीतिक स्वतंत्रता की उनकी इच्छा से दृढ़ता से जुड़ी हुई थी, और वह अत्याचार और राजनीतिक स्वतंत्रता की कमी से इतनी गहराई से प्रभावित थी कि वह देश की मुक्ति संग्राम में योगदान देने के लिए अपना जीवन देने को तैयार थी।

अपने पति की मृत्यु के बाद वह ऋषिकेश चली गईं और जीवन के अंतिम दिनों तक वहीं रहीं। अपने अंतिम वर्षों में भी, उन्होंने सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों के लिए पेंशन स्वीकार करने से इनकार कर दिया। 1930 के दशक में ब्रिटिश सरकार द्वारा उनकी डिग्री रोके जाने के बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा बीना दास को मरणोपरांत डिग्री देने में लगभग 80 साल लग गए।

मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने दास की कहानी के बारे में लिखने का फैसला किया और महसूस किया कि उनकी आजादी की यात्रा पर बहुत कम साहित्य है। वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, प्रो सत्यव्रत घोष कहते हैं, "उन्होंने सड़क के किनारे अपना जीवन समाप्त कर लिया। शव आंशिक रूप से क्षत-विक्षत अवस्था में था, जिसे वहां से गुजरने वाली भीड़ ने पाया और उनकी पहचान निर्धारित करने में एक महीने का समय लगा। क्या इस तरह के अंत का मतलब बीना दास के बारे में पूर्ण विराम लगाना है? इस भावनात्मक सवाल का जवाब शायद कोई नहीं दे सकता।

उन्होंने बहुत सी युवतियों को ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया, लेकिन यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि वह इतिहास के पन्नों में खोई हुई उन कई महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक हैं, जिन्हें वास्तव में कभी भी उनके बकाया का भुगतान नहीं किया गया था और उन्हें "अनसंग हीरोज" के रूप में वर्गीकृत किया गया। भारत के वर्तमान उप राष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू लिखते हैं, "...बीना दास जैसी बहादुर महिलाओं की प्रसिद्ध को मनाया जाना चाहिए। उन्होंने देश के लिए बहुत बड़ा बलिदान दिया। उनके जीवन की कहानियों को स्कूली किताबों में शामिल किया जाना चाहिए ताकि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियां उन बलिदानों को पूरी तरह से समझ सकें जिन्होंने कई कम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को जन्म दिया। स्वतंत्रता सेनानियों ने हमारे राष्ट्र के सुनहरे भविष्य के निर्माण के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, उसकी अनुभूति और प्रशंसा इस 'बंगाल की भूली हुई बेटी' और कई अन्य लोगों के लिए वास्तविक श्रद्धांजलि है। ❑

जीवन ही शिक्षालय है

एक विद्यार्थी बीमार पड़ गया और उसकी उपस्थिति इतनी कम हो गयी कि वह परीक्षा में नहीं बैठ सकता था। वह घबराया। व हमदन मोहन मालवीय के पास गया। मालवीय जी ने इसकी बातें ध्यान से सुनी। वह कह रहा था, 'बाबूजी, इम्तहान में न बैठ पाऊँगा और एक साल फिर उसी दर्जे में रहना पड़ेगा।'

मालवीय जी ने कहा- 'एक बात बताओ, पढ़ना अच्छी चीज है या बुरी?'

विद्यार्थी ने कहा 'अच्छी'

तो फिर पढ़ने से क्यों घबराते हो? विद्यार्थी को दर्जे का ख्याल किये बिना सच्चे मन से पढ़ना चाहिए। ये दर्जे तो ऐसे ही बना दिए गये हैं। विद्यार्थी उदास हो गया। उसे उदास देखकर मालवीय जी ने कहा, 'मेरा विश्वास मानो, पढ़ाई स्कूलों और कॉलेजों में नहीं होती। जिन्हें पढ़ना होता है वह यहाँ से निकलकर पढ़ता है। विद्या के लिए तपस्या करनी पड़ती है। जीवनभर पढ़ने का सौभाग्य तो बिरले को ही मिलता है।'

ऐसा मंदिर जहां बुलेट बाइक की पूजा होती है

✍डॉ. नवनीत स्वरगिरी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

भारत में मंदिरों की कोई कमी नहीं है। हर गली चौराहे पर आपको एक मंदिर दिख जाएगा। इसके अलावा प्राचीन मंदिरों की भी अच्छी खासी संख्या है यहां। हम सभी जानते हैं कि मंदिरों को देवालय यानी कि देवताओं का घर कहा जाता है। भगवान की मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करके इन्हें स्थापित किया जाता है और फिर लोग इन मूर्तियों को भगवान मान कर पूजते हैं । किंतु, आज हम जिस मंदिर की बात करने जा रहे हैं वह अनूठा है।

इस अनूठे मंदिर को देखने दूर-दूर से आते हैं लोग। राजस्थान का यह मंदिर इसलिए खास और अनूठा है क्योंकि यहां किसी भगवान की मूर्ति स्थापित नहीं है। बल्कि यहां एक 350 सीसी रॉयल एनफील्ड बुलेट को रखा गया है। खास बात यह है कि इस मंदिर को लोग दूर-दूर से देखने आते हैं और यहां मौजूद बुलेट मोटरसाइकिल के दर्शन कर उसकी पूजा करते हैं।

बुलेट बाबा मंदिर नाम से प्रसिद्ध है यह मंदिर । आम बोलचाल में लोग इस मंदिर को बुलेट बाबा मंदिर कहते हैं । लेकिन इसका असल नाम 'ओम बन्ना धाम' रखा गया है। यह बुलेट बाबा मंदिर राजस्थान के जोधपुर से लगभग 50 किलोमीटर दूर पाली शहर के पास बसे चोटिला गांव में स्थित है। इस मंदिर के बनने की कहानी भी बहुत दिलचस्प है। दरअसल, यह मंदिर किसी की याद में बनवाया गया था। बहुत साल पहले इस गांव के ठाकुर जोग सिंह राठौड़ ने अपने बेटे ठाकुर ओम सिंह राठौड़ को एक सड़क दुर्घटना में खो दिया था। ओम सिंह के निधन के बाद यह मंदिर उन्हीं के नाम पर बनाया गया।

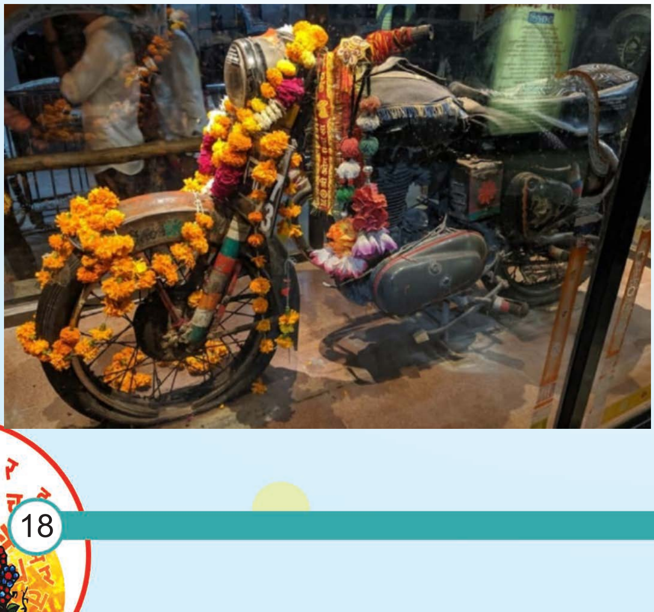

स्थानीय लोगों के अनुसार ओम सिंह राठौड़ एक सड़क हादसे में इस दुनिया को अलविदा कह गए। उनकी मौत के बाद पुलिस ने बाइक और उनके शव को अपनी हिरासत में ले लिया। बाइक थाने में खड़ी थी लेकिन हर कोई तब हैरान रह गया जब दूसरे दिन यह बाइक थाने में न होकर उस स्थान पर मिली जहां दुर्घटना हुई थी।

इसके बाद इस बुलेट मोटरसाइकिल को फिर से थाने में ले आया गया। लेकिन फिर से यह बाइक हादसे वाली जगह पर पहुंच गई। अब हर रोज का यही नियम हो गया। पुलिस के लिए यह एक अनसुलझी गुत्थी बन गई कि आखिर कैसे यह बाइक अपने आप दुर्घटनास्थल पर पहुंच जाती है?

बताया जाता है कि इसके बाद पुलिस ने बाइक पर कड़ी निगरानी रखनी शुरू कर दी। एक रात पुलिस तब हैरान रह गई जब उन्होंने देखा कि रात में बाइक खुद स्टार्ट हो गई और हादसे की जगह में जाकर रुक गई।

इस घटना को देखने के बाद पुलिस ने परिवार वालों को बाइक वापस लौटा दी। इसी घटना के बाद ओम सिंह राठौर के पिता ठाकुर जोग सिंह राठौड़ ने अपने बेटे के नाम पर मंदिर बनवा दिया और इस मंदिर में वही बुलेट रखवा दी जिस पर उनके बेटे की मौत हुई थी। अब यह मंदिर बुलेट बाबा मंदिर नाम से लोकप्रिय हो चुका है। ❑

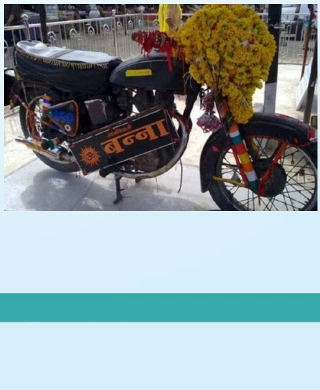

सॉरी पापा, सॉरी मम्मी

✍ **द्विज बरेजा**
आश्रित - डॉ. वी.एम. बरेजा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

रमेश अपनी कार से ऑफिस की ओर जा रहा था। सुबह का टाइम होने की वजह से सड़क पर ट्रेफिक थोड़ा कम था। ऑफिस की ओर बढ़ने पर उसके साथ दो खुशियां भी साथ-साथ चल रही थीं। वह बहुत खुश था क्योंकि कल ही उसको ऑफिस में प्रोमोशन मिला था दूसरे उसकी बेटी मन्नत ने एनएलयू की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए थे और अब उसे किसी अच्छी यूनिवर्सिटी में एडमिशन मिलने की पूरी संभावना थी। उसे खुशी थी कि उसकी बेटी ने बचपन से एनएलयू का सपना देखा था और आज वह सच हो गया था। होना भी था क्योंकि मन्नत ने इसके लिए दिन-रात मेहनत जो की थी। मन ही मन वह फूले नहीं समा रहा था।

बेटा रणदीप दो वर्ष पहले ही एआईईईई की परीक्षा पास करके उसी सिटी में फेमस कॉलेज में मिकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा है और अब बेटी भी एडवोकेट बन जाएगी।

"भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है, तुमने मुझे ऐसी औलाद दी जिसने मेरा नाम रोशन कर दिया" वह मन ही मन सोच रहा था।

कार को गैरिज में पार्क करके वह अपने चेंबर में पहुंचा। "नमस्कार साहब" दरवाजे पर बैठे ऑफिस ब्वॉय ने बोला। "नमस्कार' उसने उत्तर दिया और आगे बढ़ गया। "जयश्री कंस्ट्रक्शंस की फाइल लाना तो" उसने ऑफिस ब्वॉय से कहा। अभी वह फाइल लेकर लौटा ही था कि उसके चेंबर में लगे कॉलर आई डी फोन की घंटी बज उठी।

"मैं इंस्पेक्टर विकास बोल रहा हूं सेक्टर 15 पुलिस स्टेशन से, क्या मैं श्री रमेश कुमार जी से बात कर सकता हूं?" दूसरी तरफ से फोन करने वाले ने पूछा। "जी, बोल रहा हूं" रमेश ने जवाब दिया। हालांकि इंस्पेक्टर और पुलिस स्टेशन का नाम सुनते ही उसके मन में अनेक प्रकार के प्रश्न दौड़ने लगे कि थाने वाले सुबह के 9.30 बजे उसे क्यों फोन करेंगे। खैर ....।" "आपका बेटा रणदीप कहां है? कुछ जानकारी है आपको?" इंस्पेक्टर विकास ने पूछा। "जी हां, वो अपने दोस्त संदीप के यहां गया हुआ है तथा कल रात से वहीं पर है'' रमेश ने उत्तर दिया। "नहीं मिस्टर रमेश आपको इन्फर्मेशन नहीं है शायद। वो कल शाम से हमारे पास लॉक अप में बंद है" उसने कहा। "क्यों" उसने पूछा। "क्योंकि कल शाम उसे एक लेडी की चैन स्नेचिंग करने के जुर्म में पकड़ लिया गया था।" "अगर आप उसे रिलीज़ कराना चाहते हैं तो सेक्टर 15 के पुलिस स्टेशन में आ जाइए वरना उसे कोर्ट में पेश करके जेल पहुंचा दिया जाएगा" इंस्पेक्टर विकास ने आवाज़ को कड़ा करके कहा। रमेश के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई और वह कुछ क्षणों तक कुछ बोल नहीं पाया। तुरंत ही उसने अपने आप को संभाला और जवाब दिया "इंस्पेक्टर विकास, शीघ्र ही मैं आता हूं आपके पास थाने में।" फोन का रिसीवर रखने के बाद वह अपने चेंबर में चुपचाप बैठ गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे और क्या नहीं? जैसे तैसे वह घर लौट आया और आकर पत्नी अरूणिमा को सब बात बताई तथा उसे पुलिस स्टेशन चलने के लिए कहा। बात का पता चलते ही अरूणिमा पर तो जैसे बिजली गिर पड़ी।

"मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा कि अपना रणदीप ऐसी घटिया घिनौनी और सड़कछाप लड़कों की सी कोई हरकत कर सकता है, वह बोली।

"पढ़ने के लिए, कॉलेज के लिए, जेब खर्च के लिए, यहां तक कि जब भी उसे जरूरत होती है, उसके कहने भर से हम उसे पैसे दे देते हैं। फिर उसे यह नीच हरकत करने की जरूरत ही क्या थी?" रमेश बोला।

"बरसों से कमाई हुई हमारी रिस्पेक्ट, हमारे नाम को उसने एक पल में मिट्टी में मिला दिया। आसपास के सभी लोग, रिलेटिव्स जो कल तक हमें मन्नत के लिए कन्ग्रैचलेट दे रहे थे अब हमारे बारे में ढेरों बातें बनाएंगे, हमारे मुंह पर थू-थू करेंगे। समझ नहीं आता क्या करूं? " बोलते-बोलते अरूणिमा की आंखों से आंसू बहने लगे।

"कल तक जिस औलाद पर मैं प्राउड करता था आज उसी ने मेरा बेड़ा गर्क कर दिया, एक बार मिले तो सही वह मुझसे, फिर देखना मैं उसका क्या हाल करता हूं" रमेश गुस्से से तिलमिलाते हुए बोला।

"सुनिए, ऐसे गुस्सा करके कुछ हासिल नहीं होगा। चलिए पहले पुलिस स्टेशन चल कर इंस्पेक्टर साहब से मिलकर आते हैं और पता लगाते हैं कि आखिर यह हुआ कैसे? कैसे हमारा बेटा, जिसे

हमने अच्छे से अच्छे संस्कार दिए वह आज ऐसा ओछा काम कर बैठा" अरुणिमा ने रमेश को समझाते हुए कहा।

"ठीक है। चलो चलें" रमेश ने कहा।

पुलिस स्टेशन पहुंच कर वे इंस्पेक्टर विकास से मिले। उसने उन्हें रणदीप से मिलाया जो पुलिस स्टेशन के एक गंदे से कमरे में सलाखों के पीछे बैठा था। मम्मी पापा को अपने सामने देखकर वह फूट-फूट कर रोने लगा। रमेश और अरुणिमा भी उसकी हालत देखकर हैरान रह गए। रणदीप ने रोते-रोते मम्मी को बताया कि कल शाम से उसे थाने में बैठा रखा है और रात को उसकी पिटाई भी की गई। उसका कुछ खाने का मन नहीं था इसलिए कल रात से उसने कुछ खाया भी नहीं है। यह सब सुनकर अरूणिमा को अपने बेटे पर दया आ रही थी। परन्तु उस समय इससे भी जरूरी था उसके लिए यह जानना कि उसने ऐसा काम किया ही क्यों? जिसकी वजह से वह यह परिणाम भुगत रहा है। रणदीप ने कहा कि इंस्पेक्टर साहब उससे इसका रीज़न पूछ चुके हैं और वे ही उन्हें डिटेल से बात बता देंगे। इंस्पेक्टर विकास ने पुलिस स्टेशन में मौजूद सिपाही से रणदीप को कमरे से बाहर लाने के लिए कहा और अरुणिमा तथा रमेश को बताया, "ऐक्चूअली आपका बेटा ऐसे लड़कों के चक्कर में पड़ गया है, जिनका काम सिगरेट पीना, ड्रग्स लेना, महंगे-महंगे मोटरसाइकिलों पर घूमना, लेटेस्ट इलेक्ट्रॉनिक गैजिटों का इस्तेमाल करना है। वे सभी लड़के हिस्ट्री शीटर हैं और उनका काम ही अच्छी फैमिली के लड़के लड़कियों को अपने जाल में फंसाना और फिर उनका मिस्यूज करना है" रमेश और अरुणिमा यह सब बातें ध्यान से सुन रहे थे। अपनी बात को जारी रखते हुए इंस्पेक्टर ने बताया "उन्होंने आपके भोले भाले रणदीप को अपने जाल में फंसाया। उसे महंगे-महंगे होटलों में खिलाया पिलाया तथा महंगी-महंगी चीज़े कर्ज पर दिलवा दीं। अब रणदीप पर बहुत से पैसे कर्ज के हो चुके हैं और वे लड़के पैसे लौटाने के लिए इस पर दबाव डाल रहे हैं। पैसे न लौटाने पर उसे जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। अपनी जान बचाने के लिए उसने चैन स्नेचिंग की योजना बनाई और इसमें उन बदमाश लड़कों के गैंग ने पूरा साथ दिया। चेन स्नैचिंग करके जिस बाइक से ये दोनों भाग रहे थे वह आगे जाकर टेक्निकल फॉल्ट की वजह से धीमी हो गई और लोगों ने रणदीप को पकड़ लिया, इसकी जमकर पिटाई की तथा पुलिस के हवाले कर दिया जबकि इसका साथी बाइक लेकर भागने में सफल हो गया" रमेश और अरुणिमा ध्यान से इंस्पेक्टर साहब की पूरी बात सुन रहे थे। रमेश को याद आया कि तभी पिछले माह रणदीप ने मुझसे प्रोजेक्ट के नाम पर 5000 रूपये मांगे थे। मेरे डिटेल में पूछने पर वह कुछ बता नहीं पाया और मैंने उसे पैसे देने से मना कर दिया। खैर ....

इंस्पेक्टर विकास ने बताया "पुलिस उन लड़कों को पकड़ने में लगी हुई है और जल्द ही उन तक पहुंच जाएगी। हमारे पास उनके खिलाफ इनफ ऐविडेंस इक्ट्ठी हो चुकी है। जल्द ही वे विहाइंड द बार्स पहुंचा दिए जाएंगे। आपका बेटा एक पढ़ा लिखा नौजवान है और अच्छे स्टेटस वाली फेमिली से संबंध रखता है। मैं समझता हूं कि वह रास्ता भटक कर इन लड़कों के चक्कर में फंस गया है। इसलिए मैं इसके खिलाफ कोई केस रजिस्टर नहीं करूंगा ताकि इसका फ्यूचर खराब न हो। परंतु इससे पहले इसे आपके सामने मुझे प्रॉमिस करना होगा कि वह ऐसा चीप और बिलो डिग्निटी काम कभी नहीं करेगा" इंस्पेक्टर साहब की बातें और अपनी फेमिली के प्रति सिंपथी की फीलिंग देखकर रमेश इमोशनल हो गया जबकि अरुणिमा फूट-फूट कर रोने लगी । मन ही मन वह सोच रही थी कि जिन संस्कारों को वह जीवन भर बचाए रखी आज शायद उनका रिजल्ट उसे मिल रहा है। इंस्पेक्टर साहब को रणदीप में तथा फैमिली में संस्कारों की जड़े दिखाई दे रही थीं। उसे विश्वास था कि उनका बेटा ऐसा काम रिपीट नहीं करेगा। अरुणिमा ने तुरंत रणदीप से कहा कि वह इंस्पेक्टर विकास से सॉरी फील करे तथा फ्यूचर में कभी कोई ऐसा काम न करने का प्रॉमिस करे जिससे सोसाएटी में उसकी तथा फैमिली की बदनामी हो।

"सर, जिंदगी भर मैं आपका अहसान नहीं भूल पाऊंगा। आपकी इस काइंडनेस की वजह से मेरा फ्यूचर खराब होने से बच गया। मैं प्रॉमिस करता हूं कि आज के बाद मैं कभी ऐसे लड़कों की बैड सोसाएटी में नहीं पडूंगा और अपनी पढ़ाई पर पूरी तरह कान्सन्ट्रेट करूंगा ताकि मेरी वजह से मेरे मम्मी पापा का सिर सोसाएटी में न झुक पाए" रणदीप रोते हुए बोला। आज उसकी आंखों से पश्चाताप के आंसू छलक रहे थे और उसे अभी इतनी बड़ी भूल का पूरा अहसास हो चुका था। इंस्पेक्टर साहब को थैंक्स कर रमेश, अरुणिमा और रणदीप सेक्टर 15 थाने से बाहर निकले। बाहर आते ही रणदीप पापा से गले लिपट गया और फूट-फूट कर रोते हुए बोला "सॉरी पापा, सॉरी मम्मी" ❑

बदल जाता है सब

✍ **तुमुल राय**
वरिष्ठ अधिकारी
भूभौतिकी विभाग
राजस्थान क्षेत्र

क्वारंटाइन के बोझिल दिनों को अलविदा कहते ही मन फुदकने लगा पुराने अड्डों पे चक्कर लगा आने के लिए। वो पुरानी गलियां, मोहल्ले के अड्डे, घाट और यूनिवर्सिटी की चाय और समोसे की दुकानें। मन जैसे मान बैठा था कि टाइम ट्रेवल होना ही है आज तो। वो पुरानी ज़िन्दगी जो अभी भी ज़ेहन में एकदम ताज़ा है और जिसके लिए तरस रहे हैं जाने कब से बस इन अकस्मात मिली छुट्टियों में ही जी लेंगे। तो बस वो पुरानी वाली जीन्स पहनी, गमछा डाला और अपनी प्यारी स्कूटर को किक स्टार्ट किया और चल पड़े उन रास्तों पे जिनको अक्सर नापा करते थे।

कहीं वापस लौटना एक अनूठा एहसास होता है। वो फेक कॉन्फिडेंस प्रचुर मात्र में होता है कि हम इस जगह को जानते हैं। उस शहर की तो बात ही अलग हो जाती है जहाँ आप बच्चे से जवान हुए हों। फिर तो ये लगता है कि शहर भी हमें जानता है। अपनापन तो वो चीज़ है जिसके लिए लोग दुनिया भटक जाते हैं पर मिलती नहीं। पर ये दुनिया का वो कोना था जहाँ वो हमारे लिए पर्याप्त मात्रा में था।

मध्यम गति से हम अपनी स्कूटर पे अग्रसर थे अपनी यूनिवर्सिटी जाने को। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय। जी हाँ यहीं के प्रोडक्ट हैं हम। अमूमन हमारे यहाँ 'अल्मा मैटर' को प्रोडक्ट ही कहा जाता है। फ़िलहाल बेहाली के काफी साल गुजरे हैं यहाँ जब बदहवास इन सड़कों पे घूमा करते थे इस तलाश में कि जीवन में क्या करना है। जो भी करना हो बस यहाँ से निकलना है ये दिमाग में दौड़ता रहता था। खैर इन्ही सड़कों पे टूटे हुए आत्म-विश्वास को जोड़ के एक मुकम्मल रास्ता सा बन गया और हम यहाँ से चले गए। आज लौट के ये लग रहा था कि यहाँ का जीवन कितना सुखद था। फिर हमारे दिमाग ने हमसे एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल पूछा -'हम पहले ज्यादा मुर्ख थे या आज ?'

इस सवाल को नज़रअंदाज़ करते हुए हम आगे बढ़े। विश्वनाथ मंदिर (वि.टी.) पर गाड़ी लगायी और एक पुराने मित्र को फ़ोन लगाया। पुराने वृक्षों में एक-दो जो बचे थे उनमें ये भी थे। फ़ोन पे साहब ने बताया के वि.टी. पे क्या, आओ नया कैफ़े खुला है उधर ही बैठते हैं। माहौल अच्छा हुआ करता है उधर का। हम जब यहाँ हुआ करते थे तो माहौल तो वि.टी. का ही अच्छा हुआ करता था। खैर हम आगे बढ़े कैफ़े में कॉफ़ी मंगाई गयी। बातचीत हुई पर माहौल नदारद। उसको तलाशते हुए फिर वि. टी. आये। छोला-समोसा खाया पर अब भी माहौल नदारद था। मन अब बेचैन होने लगा। स्कूटर उठाई एक चक्कर ब्रोचा होस्टल के लगा लिए जो हमारा होस्टल हुआ करता था। पृथु पाण्डेय का रूम दिखाई दिया पर माहौल नहीं। दिमाग ने धीरे से कहा बेटा यहाँ नहीं है जो खोज रहे, निकल लो जितना जल्दी हो सके। यूँ तो अक्सर दिमाग हमारा फितूर ही कहता है पर आज बात सही लगी तो निकल लिए।

माहौल के तलाश में अगला ठिकाना था हमारा स्कूल। शायद वहां कुछ पहले सा मिल जाये इसकी तलाश में पहुंचे। स्कूल का बंद दरवाज़ा देखा। वो अभी भी वैसा ही था। ये देख के अच्छा लगा। बगल वाली दुकान में झाँका, दुकानदार तो वो अंकल जी ही थे जो हुआ करते थे। पर वजन और दाढ़ी मुछों में सफेदी देख के एक बार को मैं पहचान नहीं पाया। उन्होंने मुझे ज़रा भी भाव न दिया। काउंटर पे पहुँच के मैंने एक पैटीज मांगी। उन्होंने तुरंत पैटीज मुझे थमा दी। और तो और मेरे बिना कहे केचप की बोतल भी। अब मुझे यकीन हो गया कि ये तो पहचान ही रहे हैं मुझे। पर फिर अगले ही पल बिना दुआ सलाम के वो अपने काम में व्यस्त हो गए। जब नहीं रहा गया तो मैंने कह दिया- "हम भी यहीं से पढ़े हैं"। एक अनमनी मुस्कान के साथ उन्होंने मुझे देखा और अपने काम में व्यस्त हो गए। ये तो तय हो चुका था कि वो मुझे पहचान नहीं रहे थे। अभी तक जो पैटीज मुझे बचपन का स्वाद दे रही थी अचानक फीकी लगने लगी थी। माहौल की तलाश अभी भी जारी थी और संभावनाएं कमजोर।

शाम ढलने लगी थी और मेरे अन्दर की आस भी। रास्ते में चाट का ठेला दिखा तो जीभ लप-लपा गयी। तृष्णा शांत करने के लिए गाड़ी किनारे लगायी और थोड़े दूर लगे ठेले से गोलगप्पा (पानीपूरी)

खाने के लिए बढ़े। अभी ठेले तक पहुंचे ही थे के बम्बई एक अंग्रेज टाइप दोस्त का फ़ोन आया। तड़-तड़ाती अंग्रेजी में हमको बात करता देख चाट वाला कुछ भांप गया शायद। हमने गोलगप्पे की इशारा किया तो उसने चाट परोसने के पहले ज्ञान परोसना बेहतर समझा। बोला - "दिस इस गोलप्पा, वाटर बाल। खट्टा, लिटिल तीखा एंड मीठा इफ यू बाँट।" अमूमन बाकि शहरों में इतना समझाने का रिवाज़ नहीं है पर बनारसियों को ज्ञान देना इतना पसंद है कि अक्सर अपना काम छोड़ के ज्ञान देने को अपना पहला धर्म समझते हैं। मन तो किया के बोलें - "हमहु यही ठीइयान का हाई गुरु"। लेकिन हमने बनारसी होने का दूसरा धर्म निभाया 4 प्लेट गोलगप्पा निबटा के इत्मिनान के साथ घर लौटे।

बेचैनी धीरे-धीरे कम हुई और बात समझ में आने लगी थी। हम अक्सर जिन शहरों या कस्बों से दूर जाके बस जाते हैं वो हमारे ज़ेहन में वैसे के वैसे ही रहते हैं। बल्कि हमारे करीब होने के कारण हम उनकी बुरी चीज़ें धीरे-धीरे भूल जाते हैं। एक बेहद आत्मीय सी तस्वीर हमारे पास रहती है। पर तस्वीरों के साथ एक मूल संकट है। वो समय के साथ बदलती नहीं है। इसीलिए अक्सर पुरानी तस्वीरों में लोगों को पहचान पाना मुश्किल हो जाता है। शायद ऐसा ही मेरे साथ हुआ। मैं एक तस्वीर साथ लेके चला था अपने शहर की। अब वो शहर बस मेरे ज़ेहन में है। मेरा वो शहर सिर्फ जगह से नहीं पर उन लोगों से भी है जो है नहीं अब। हक़ीक़त ये ही है कि अब वो शहर नहीं है। वो माहौल भी नहीं। शायद जीवन का श्राप यही है। पहले अपने पास जो है उससे छोड़ के दौड़ लगता है। फिर वहां पहुँच के सोचता है कि क्यूँ छोड़ आये वो जो इतना प्यारा था। पर क्या करें हम चलते रहते हैं और बदल जाता है सब।❑

कनाडा से काशी पहुंची अन्नपूर्णा

✍ **अजय राय**

आश्रित-तुमुल राय

वरिष्ठ अधिकारी, भूभौतिकी विभाग, राजस्थान क्षेत्र

काशी से 107 साल पहले चोरी हुई मां अन्नपूर्णा की प्रतिमा कनाडा में मिली। वहां से उसे भारत लाया गया। मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा से पहले देव प्रतिमाओं को जिस तरह नगर भ्रमण कराया जाता है, उसी तरह कनाडा से आई देवी की प्रतिमा को अयोध्या समेत विभिन्न नगरों में भ्रमण कराने के बाद काशी विश्वनाथ मंदिर के परिसर में स्थापित किया गया। जिस दिन भगवान विष्णु का जागरण होता है, उसी देवोत्थानी एकादशी को अन्न-धन की देवी की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

शिव की नगरी कही जाने वाली काशी से अन्नपूर्णा का रिश्ता भगवान शंकर से भी अधिक गहरा है। काशी को शिव ने अपनी प्रिय नगरी के रूप में अंगीकार किया जबकि अन्नपूर्णा को काशी ने आमंत्रित किया। अवधूतों और फक्कड़ों की नगरी काशी मानती है कि इसके संन्यासियों की ही तरह भोलेनाथ ने भी माता अन्नपूर्णा से भिक्षा ग्रहण किया था। काशी में अन्नपूर्णा उस समय भी थी, जब काशी विश्वनाथ समेत सभी देवता निर्वासित कर दिए गए थे। शिव को काशी में दोबारा आने के लिए काफी यत्न करना पड़ा था। अन्नपूर्णा के काशी आने की कथा रोचक भी है और शिक्षाप्रद भी।

बताते हैं कि काशी में महामारी आ गई थी। अकाल पड़ गया था। हालात शायद कोरोना से भी बदतर थे। लोग कुपोषण और बीमारी से मर रहे थे। कोई दवा लोगों की प्राण रक्षा नहीं कर पा रही थी। तब देवताओं ने मंत्रणा की और काशी का राजा दिवोदास को बताने का फैसला लिया गया। देवताओं ने दिवोदास से निवेदन किया कि वे काशी का राज्य संभालें और लोगों की प्राण रक्षा करें। दिवोदास ने शर्त रखी कि वह राज्य तभी संभालेंगे जब कोई देवता इस नगरी में न रहे। हर किसी को काशी छोड़ना पड़ेगा, यहां तक कि शिव शंकर को भी। देवता काशी छोड़कर चले गए और दिवोदास ने काशी का राज्य संभाल लिया। आदि शंकराचार्य ने लिखा है कि काश्यते प्रकाश्यते इति काशी अर्थात जो स्वयं प्रकाशित हो वह नगरी काशी है। इस दिवोदास ने काशी का राज्यभार संभाल लिया। दिवोदास का दूसरा नाम धन्वंतरि बताया जाता है और धन्वंतरि आयुर्वेद के पितमाह माने जाते हैं।

राज्य संभालने के बाद दिवोदास धन्वंतरि ने अपने मंत्री धनंजय से कहा कि वे माता अन्नपूर्णा को किसी तरह काशी लेकर आएं क्योंकि दिवोदास जानते थे कि औषधि तभी काम करती है जब रोगी पुष्ट हो। अन्न का सेवन किसी औषधि से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता ही किसी भी तरह के संक्रमण से हमारी रक्षा करती है। यह बात कोरोना से लड़ते हुए हमने ठीक से समझा है। इस बीमारी की कोई दवा नहीं थी। दवा के नाम पर जो कुछ दिया जा रहा था वह केवल सपोर्ट था। ऐसी मदद जिससे बीमारी की तीव्रता को रोका जा सके लेकिन विषाणुओं (वायरस)

से लड़ाई तो रोग प्रतिरोधक क्षमता को ही लड़नी पड़ी।

काशिराज का आदेश पाकर धनंजय अन्नपूर्णा की तलाश में चले। काफी भ्रमण के बाद भी उन्हें अन्नपूर्णा का कोई पता नहीं चल पा रहा था। घूमते-घूमते वे असम पहुंचे। वहां निराश होकर एक सरोवर के तट पर बैठ गए। उन्होंने तय कर लिया था कि अब प्राण भी त्यागना पड़ेगा, देवी के मिलने के आसार तो नहीं है। तभी कुछ महिलाएं सरोवर तट पर पूजन करने पहुंची। पता चला कि वे देवी अन्नपूर्णा का पूजन करने आई हैं और उन्होंने व्रत धारण कर रखा है। धनंजय अन्नपूर्णा की तलाश में सरोवर में कूद गए। वे गहराई में उतरते चले गए और वहां उन्हें देवी के स्वर्ण स्वरूप के दर्शन हुए। धनंजय ने प्रार्थना करके उन्हें काशी आने के लिए राजी किया। बताते हैं कि धनंजय को देवी के जहां दर्शन हुए वह कामाख्या के पास कोई जगह थी। मगर अन्नपूर्णा का प्राचीन मंदिर असम के सिलचर में है और इसकी दूरी कामाख्या से दो सौ मील के करीब है। कुछ भी हो अन्नपूर्णा के आगमन के बाद काशी को दुर्भिक्ष और व्याधि से मुक्ति मिल गई। कहा जाता है कि तब से काशी में कोई भूखा नहीं सोता।

अन्नपूर्णा व्रत की कथा धनंजय से जुड़ी हुई मिलती है। मगर अन्नपूर्णा मंदिर के पूर्व महंत रामेश्वर पूरी धनंजय और दिवोदास और अकाल कथा की पुष्टि करते थे। इसके लिए प्रमाण स्वरूप उन प्रतिमाओं का जिक्र करते जिनके स्वर्णमयी स्वरूप के दर्शन धनतेर (धन्वंतरि जयंती) से अन्न के त्यौहार अन्नकूट तक चार दिनों तक होते हैं। बताया जाता है कि धनंजय ने जिस रूप में माता अन्नपूर्णा के दर्शन किए थे, ठीक उसी रूप में उन्होंने माता की स्वर्ण प्रतिमा बनवाई गई थी। बनारस में काशी विश्वनाथ मंदिर से सटा हुआ अन्नपूर्णा का मंदिर है। उसमें माता अन्नपूर्णा,भूमि और महालक्ष्मी की तीन प्रतिमाएं हैं। इस मंदिर से सौ साल पहले किसी प्रतिमा के चोरी होने का उल्लेख नहीं मिलता है। काशी विश्वनाथ मंदिर से कोई प्रतिमा चोरी हुई, इसका भी उल्लेख कहीं नहीं है। मगर कनाडा सरकार ने जब भारत को सौंपा है तो जरूर किसी ने किसी जगह से प्रतिमा चोरी होकर कनाडा पहुंची होगी।

यह संयोग ही है कि दिवोदास धन्वंतरि काशी को महामारी से बचाने के लिए असम से अन्नपूर्णा को काशी आमंत्रित किया और आज फिर एक बार कनाडा से अन्नपूर्णा की प्रतिमा तब आई है जब कोविड-19 के संक्रमण से पूरा देश त्राहि-त्राहि कर उठा है और भारत समेत पूरी दुनिया में कुपोषण बढ़ा है। इसके क्या संकेत हैं, यह तो वक्त ही बताएगा। ❑

एक उम्मीद

✍ **श्रीमती तनु गुप्ता**
आश्रित-सचिन गुप्ता
मुख्य अभियंता (भंडारण), सीओईईएस, गुवाहाटी

मेरा जन्म होने जा रहा है... मैं खुश हूँ ... कि, एक नाम और अस्तित्व होगा मेरा.. समय...... समय नजदीक आ गया और कुछ ही पल में मैं इस 'सुन्दर जगत' में सबके बीच आ गयी।

मैं खुश थी पर ये लोग जो मुझे दिखायी दे रहे थे .... खुश नहीं थे पर .... पर क्यों ? पता नहीं.....

धीरे - धीरे मैं 7 साल की हो गयी । पढ़ाई ..... पढ़ाई क्या होती है मैं अनजान थी इस शब्द से.... मेरे माता – पिता मुझे किसी घर में भेजने के लिये बातें कर रहे थे ... मुझे लगा मेरा बेहतर जीवन शुरू हो जायेगा !

कुछ समय पश्चात मैं एक घर में पहुँचा दी गयी वहीं मुझे एक छोटी बच्ची की देख-रेख करनी थी ! मैं खुद 7 साल की थी। मेरा भी खेलने का मन होता था.... मेरी सभी इच्छायें समाप्त हो गयी।

मैं उसको उठाती, उसे खाना खिलाती, उसके बाल संवारना उसके छोटे-छोटे सारे काम करती जब वह उदास होती तो सारे घर के लोग उसे हँसाते तथा सभी उसे हमेशा खुश देखना चाहते थे।

मैं... मेरी तो उदासी, खुशी मेरी आँखों में ही बीत जाती थी। समय गुजर रहा था पर किसी को मेरी परवाह नहीं थी। मैं अपनी उदासी को बाहर उड़ते हुये पंछी को देखने में भूल जाती थी। मैं कहना बहुत चाहती थी पर कहती भी तो किससे?

मैं अपने जीवन को, अपनी उदासी को अपना भाग्य समझकर व्यतीत कर रही थी। क्योंकि लोग कहते हैं कि गरीबों को हक मिलना चाहिये, पढ़ाई मिलनी चाहिये पर कहने वाले ही हमको अपने घर में रखते हैं।

क्या हमारी विवशता लाचारी को समझने वाला हृदय इस दुनिया में है ? क्या कोई हमारे भविष्य के लिये अपने भविष्य का कुछ समय दे पायेगा? या सब यही चाहेंगे कि ऐसे घरों में और बेटियाँ जन्में जो हमारे घर को संभालने के लिये तैयार हो जाये....?

क्या, अपना टाइम आयेगा ?

✍ **दिलीप कुमार महतो**
वरिष्ठ भूभौतिकीविद
केजी बेसिन परियोजना, काकीनाड़ा

हम सभी के जीवन में हमारे संघर्ष और आकांक्षाएं होती हैं, चाहे हम कितने भी सफल हों या न हों।

और हम सब रोज सोचते हैं, क्या अपना टाइम आएगा? मैं भी संघर्ष करने वालों में से एक हूं। मेरे भी कुछ सपने हैं और मैं उन्हें हकीकत में बदलना चाहता हूँ।

अपने सपनों को साकार करने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप उन लोगों के साथ तालमेल बिठाएं जिनके सामने सपने हैं। लेकिन, एक बात याद रखें अगर लोग आपके सपनों पर नहीं हंस रहे हैं... तो वे काफी बड़े नहीं हैं!

शुक्र है, मुझे ऐसे लोग मिले जो मेरे सपनों को साझा करते हैं या कम से कम मेरे सपनों के साथ जुड़े हुए हैं। वे लोग कई कंपनी में मेरे सहयोगी और पूर्व सहयोगी हैं। यह मेरे सहयोगी के साथ शुरू हुआ, लेकिन फिर, एक-एक करके, एक अद्भुत टीम मेरे पूरे कैरियर में एक विजन पर काम करने के लिए इकट्ठी हुई, जिसे अब हम सभी साझा करते हैं। हमारे पास कुछ पागल विचार हैं जिनके माध्यम से हम भारत के तेल और गैस क्षेत्र में कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से योगदान देना चाहते हैं। हम अभी शुरुआत कर रहे हैं और हम अपनी मंजिल से बहुत दूर, बहुत दूर हैं। हमें यह भी नहीं पता कि हमारे रास्ते में हमारा क्या सामना होगा या कितना समय लगेगा। हालाँकि, हम मानते हैं कि "अपना समय आएगा"। और बस इतना ही हमें काम में अपना विश्वास बनाए रखने की जरूरत है।

ऐसे कई लोग हैं जो सोचते हैं कि "मेरा समय आएगा"। जी हां, आपने सही पढ़ा। विभिन्न श्रेणियां। हम सभी का इस मुहावरे के प्रति एक अलग तरह का नजरिया है। कुछ लोग हैं जो सोचते हैं कि "क्या अपना समय आएगा?", जबकि अन्य लोग भगवान से प्रार्थना करते हैं "अपना समय कब आएगा", कुछ अन्य लोग इसके बारे में सपने देखते हैं और कहते हैं "एक दिन अपना समय जरुर आएगा", अन्य लोग संघर्ष करते हैं और कहते हैं "अपना समय कभी नहीं आयेगा", कुछ लोग कहते हैं "अगर मुझे ये सुविधाएं और अवसर मिलते हैं, तो अपना समय आएगा"। हालाँकि, कुछ अन्य लोग सिर्फ यह दोष देते हैं कि "इतने आदमी के कारण, एक गरीब या एक मध्यम वर्ग के परिवार में मेरे जन्म के कारण या एक अच्छे कॉलेज के संपर्क में न आने के कारण या भारत की व्यवस्था के कारण, मैंने सारी आशा खो दी, लेकिन शायद अपना टाइम आयेगा" ।

लेकिन एक और श्रेणी है। वे कहते हैं, "अपुन अपना टाइम लाएगा"।

1) "क्या अपना समय आयेगा?" प्रकार

जो सोचते हैं "क्या अपना टाइम आयेगा?" यानि "क्या किसी दिन मेरा समय आएगा" उनकी क्षमताओं पर संदेह है या कोई क्षमता नहीं है। वे तब तक कुछ भी हासिल नहीं कर सकते जब तक या तो वे खुद में आत्मविश्वास पैदा करना शुरू नहीं कर देते या कोई अच्छा गुरु नहीं ढूंढ लेते जो उन्हें कुछ आत्मविश्वास दे सके लेकिन लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित भी कर सके। अपनी पिछली कंपनी में छात्रों को सलाह देने के दौरान, मैंने पाया कि इस प्रकार के लोगों में बहुत अस्थिर और अडिग आत्मविश्वास होता है। कभी-कभी उन्हें बहुत भरोसा होता है कि वे जीवन में कुछ भी कर सकते हैं, जबकि कुछ घंटों के भीतर वे किसी तरह के अवसाद में आ जाते हैं कि वे जीवन में कुछ नहीं कर सकते। उन्हें नियमित (कभी-कभी दैनिक और कभी-कभी कई बार दैनिक) आत्मविश्वास निर्माण, कोचिंग और प्रबंधन की आवश्यकता होती है। उन्हें अपने चारों ओर एक बहुत ही सकारात्मक वातावरण बनाने की आवश्यकता है जो उनके सकारात्मक विचार पैटर्न को मजबूत कर सके और नकारात्मकता को हतोत्साहित कर सके।

2) "अपना टाइम कब आएगा?" प्रकार

जो लोग सोचते हैं "अपना टाइम कब आएगा?" यानी "मेरा समय कब आएगा?", बस बेकार बैठे हैं और सोचते हैं कि एक दिन उनका समय अपने आप दौड़ता हुआ आएगा। वे किसी चमत्कार की आस में जी रहे हैं। वे कुछ नहीं करते। वे कुछ करना ही नहीं चाहते। लेकिन, वे सोचते हैं कि एक दिन उनका भी समय आएगा।

मुझे इन लोगों के लिए बहुत खेद है। मैं भी भाग्य में विश्वास करता हूं। लेकिन किस्मत उनका भी काम करती है जो अपने लिए कुछ प्रयास करते हैं। ऐसे लोग जीवन में शायद ही कभी कुछ हासिल करते हैं। वे जहां पहुंचना चाहते हैं, वहां पहुंचने के लिए उन्हें एक बड़े धक्के की जरूरत है। उनका मार्गदर्शन करना भी एक कठिन कार्य है। आप उन्हें कितना भी धक्का दें, वे शायद ही कभी कोई प्रयास करेंगे।

इस प्रकार के लोगों को आगे दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। पहले वे हैं जिन्हें विशेषाधिकार प्राप्त हैं। उनके पास जीवन में सभी सुख-सुविधाएं हैं। वे जो चाहते थे उसके लिए उन्हें कभी संघर्ष नहीं करना पड़ा। उनके माता-पिता ने उन्हें सब कुछ प्रदान किया। जब भी उन्हें अपने माता-पिता से डांट पड़ती है, तो वे सोचते हैं कि "एक दिन मेरा भी समय आएगा"। वे कोई पहल तभी करते हैं जब उन्हें कोई झटका लगता है। यह आमतौर पर माता-पिता के समर्थन में रुकावट या कोई दुर्घटना होती है जो उन्हें किसी प्रकार की कार्रवाई में ले जाती है।

दूसरी श्रेणी वे हैं जिनके पास कुछ नहीं है। कोई पैसा नहीं, कोई परिवार का समर्थन नहीं, एक महान कॉलेज या बड़े शहर की पृष्ठभूमि नहीं, संसाधनों की कमी आदि। वे मूल रूप से जीवन में अपनी स्थिति के लिए हर बार संसाधनों की कमी को दोष देते हैं। इस प्रकार के लोगों को एक ऐसे गुरु की आवश्यकता होती है जो उनकी आंतरिक शक्ति को उनमें से निकाल सके। एक बार जब उन्हें पता चलता है कि वे कुछ हासिल करने में सक्षम हैं, तो वे चमत्कार कर सकते हैं।

यही हाल अन्य वर्गों का भी है। उनमें से अधिकांश अपने जीवन में कुछ करने के लिए भगवान या भाग्य की प्रतीक्षा करते हैं। उनके साथ जो कुछ हो रहा है उसके लिए वे परिस्थितियों, शहर, माता-पिता, गरीबी, कॉलेज, पृष्ठभूमि आदि को दोष देते हैं।

मुझे अपने ट्यूशन छात्रों में से एक याद है (मैंने अपने जीवन में एक ट्यूटर के रूप में काम किया है)। वह हमेशा अपने पिता को एक अच्छे कोचिंग सेंटर में पढ़ने के लिए पैसे और सहायता नहीं देने के लिए दोषी ठहराता था। एक और छात्र एक कदम आगे था। वह असली परीक्षा में कभी नहीं बैठी। क्यों? सिर्फ इसलिए कि उसने सोचा कि वह पर्याप्त रूप से तैयार नहीं थी। हालाँकि, वह हमेशा चाहती थी कि उसका IIT-JEE परीक्षा में चमत्कारिक रूप से चयन हो जाए।

3) "आपुन अपना टाइम लाएगा" प्रकार

यह अंतिम श्रेणी है। इस वर्ग के लोगों की सफलता की संभावना सबसे अधिक होती है। वे स्वयं प्रेरित हैं। वे सफलता के लिए कुछ भी करने के लिए दृढ़ हैं। वे न केवल स्वयं सफलता का स्वाद चखते हैं, बल्कि अपने जैसे अन्य लोगों को भी इसे प्राप्त करने में मदद करते हैं।

क्या आपके परिवेश में ऐसे लोग हैं? यह अच्छा है, क्योंकि उनका उत्साह और जोश संक्रामक है। बग को स्वयं पकड़ें यदि आपने पहले से नहीं किया है।

वे कभी भी उनके पास आने के अवसर की प्रतीक्षा नहीं करते। वे एक अवसर पैदा करते हैं। मैं भी एक छोटे झारखंड सीमावर्ती गांव से हूं और गैर-आईआईटी पृष्ठभूमि से हूं। लेकिन मैंने इसके लिए कभी अपनी पृष्ठभूमि को दोष नहीं दिया। अब मैं पूरे भारत में IIT के लोगों के साथ काम कर रहा हूं। मुझे अपने काम पर भरोसा है, मैं सभी मानदंडों में उत्कृष्टता प्राप्त करता हूं और अपने मानकों में लगातार सुधार करता रहता हूं।

इसकी शुरुआत मेरी मानसिकता में बदलाव के साथ हुई है। मैं स्थिति को दोष दिए बिना अपने कम्फर्ट जोन से बाहर आ गया हूं। मैंने सही जगह और सही समय पर कड़ी मेहनत की। मैंने अभी तक अपने सपनों को हासिल नहीं किया है। लेकिन अब हम इसे हासिल करने के लिए एक टीम के रूप में काम कर रहे हैं। एक टीम के रूप में, हम यहीं नहीं रुके। हमने कभी भी सही कामकाजी माहौल पाने का इंतजार नहीं किया। हम हमेशा ऑयल इंडिया लिमिटेड की बेहतरी के लिए कुछ करने के लिए दृढ़ विश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं।

हम इससे भी संतुष्ट नहीं हैं। हम अभी भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं।

मैं अपनी टीम के सभी सदस्यों से विनम्रतापूर्वक अनुरोध करता हूं, कृपया पूरी ईमानदारी से कार्य करें। आपको अपने समर्पण, दूरदृष्टि और कड़ी मेहनत के साथ अपने अच्छे दिन लाने हैं।

अपना टाइम जरूर आएगा।

वर्क - ओवर गतिविधियां

बिप्लव डेका
अधीक्षण अभियंता
ओ.जी.पी.एस. विभाग, दुलियाजान

तेल कूप के सक्रियता को विस्तृत एवं उसके नियंत्रण हेतु तेल अथवा गैस उत्पत्ति के प्रतिस्थापन तथा सभी उत्पत्ति यंत्रों के एवज और अन्य संबंधित कार्यों को ही वर्क - ओवर अथवा कूप समाप्ति व्यवधान कहते हैं। वर्क - ओवर (कूप- समाप्ति) उन तेल - कूप व्यवधानों का संगलप है जिनमें सम्मिलित है वार्यलाईन (तार - डोरी व्यवधान), स्नबिंग (झिड़की व्यवधान) और कोइल्ड ट्यूबिंग (कुंडलित नलिका तंत्र व्यवधान) ।

वर्क – ओवर अथवा समाप्ति व्यवधान कार्यों को क्रियान्वित करने के कई कारण है जैसे कि :

समाप्ति व्यवधान तेल कूप प्रतिस्थापन में सबसे जटिल, कठिन एवं महंगे कार्यों की श्रेणी में आते हैं । इन सक्रिय बहुकार्यों को तब क्रियान्वित किया जाता है जब तेल - कूप अतिरिक्त उत्पादन में असमर्थ है। तेल कूप नलिका यंत्र में क्षति के कई कारक है जैसे - संक्षारणन, जंग लगना इत्यादि जिससे तेल - कूप की समग्रता में सम्भावित संकट पड़ सकती है। कूप तंत्र एवं घटक जैसे कि नलिका यंत्र, सुरक्षा कपाट (सैफ्टी वाल्व), वैधुनिक निमज्जनीय पंप इत्यादि के खराबी से उनका बदलाव अथवा पुन : स्थापन करना आवश्यक पड़ता है। कई परिस्थितियों में बदलते तैलाशय की अवस्थाओं के कारण पूर्ववर्ती समाप्ति व्यवधान उत्पादन के लिए अनुपयुक्त बना देती है । उदाहरण के तौर पर एक उत्कृष्ट उत्पादकता भरी तेल - कूप जिसे 5 1/2" कूप आवरण (केसिंग) से आधारित किया गया है जिससे अधिक मात्रा में तेल का प्रवाह हो सके। कुछ सालों बाद यह तैलाशय एक स्थिर प्रवाह का आधार नहीं रह जाता है। तब तेल नलिका यंत्र को और संकरा बनाया जा सकता, जिससे एक स्थिर प्रवाह व उत्पादकता बनी रहे।

समाप्ति गतिविधियाँ

किसी भी समाप्ति व्यवधान से पूर्व तेल कूप को मंद अथवा स्थिर करना आवश्यक है। समाप्ति व्यवधान को निश्चित समय से पूर्व नियोजित किया जाता है जिससे कूप को मंद करने हेतु विस्तृत समय मिले और विपरीत - संचार (रिवर्स सर्क्युलेशन) निश्चित समय में किया जा सके । इस कार्य के लिए विशेष प्रबंधन उपकरण (ड्रिलिंग रिग) की आवश्यकता होती है। कूप को स्थिर करने के बाद कूप - स्रोत यंत्र (वेल - हैड) तथा संबंधी माध्यमिक प्रणालियों को हटा दिया जाता है। फिर फौरन ही निर्धमन - विरामक (ब्लो आउट प्रिवेंटर) को स्थापित किया जाता है। तत्पश्चात नलिका शीर्ष (ट्यूबिंग हैंगर) को कूप आवरण (केसिंग) में उठा दिया जाता है जिससे समस्त समाप्ति नलिका एवं अन्य प्रासंगिक यंत्रों को बाहर निकाला जा सके । कई अवसरों पर नलिका एक या एक से अधिक स्थिरिकारक (पैकर) से स्थायी किया जाता है। यदि यह स्थिरिकारक पुन: प्रापणीय है तब इसे विमोचन अथवा निस्तार किया जाता है और नलिका के साथ बाहर निकाला जाता है। यदि स्थिरिकारक चिरस्थायी है तब नलिका की निचली हिस्से को ज्योंही रखा जाता हैं और ऊपरी हिस्से को बाहर निकाला जाता है। यदि आवश्यकता पड़े तब नलिका एवं स्थिरिकारक की छंटाई की जाती है। उसके बाद नए समाप्ति व्यवधान में नया स्थिरिकारक दूसरी गहराई में स्थित किया जाता है और नया नलिका यंत्र नमित किया जाता है।

कूप-आवरण में समाप्ति गतिविधियाँ

यद्यपि कूप -आवरण तरल / द्रव से तुलनात्मक रूप से कम संपर्क में रहता है परंतु इस आवरण की अखण्डता समय के साथ घटती जाती है। कई अवसरों पर क्षतिग्रस्त आवरण का बदलाव नए खनन एवं अन्वेषण से आर्थिक रूप से किफायती चयन हो सकता है, परंतु कूप - आवरण पुख्ता सीमेंट से बंधित रहता है जिससे आवरण का बदलाव अत्यंत मुश्किल और खर्चीला बन जाता है। यदि आवरण का बदलाव न किया जा सके तब गतिरोध खनन (साइड ट्रेकिंग) करना निर्वाय है। ❑

स्वास्थ्य एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा स्वच्छता का अंत: संबंध

✍ **हिमांशु डांगी**
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
राजस्थान क्षेत्र

1. प्रस्तावना

स्वच्छता किसी भी देश के व्यवहार में अगर आ जाए तो उस देश का नागरिक ना केवल स्वस्थ रहेगा बल्कि वह एक रोग प्रतिरोधक वातावरण चारों ओर बना देश को प्रगति की ओर अग्रसर करेगा।

''इस वक्त की है, आवाज नई, स्वच्छता है, देश की डगर नई, लो इसे हर कोई अपनाएं, ताकि रोग मुक्त हो, देश का हर एक कोना रहे हमारा देश हमेशा सोना .... सोना''

2. स्वच्छता से रोग पर असर

स्वच्छता एवं रोग दोनों एक दूसरे से पृथक हैं, अभिप्राय यदि हम स्वच्छता की ओर अग्रसर होंगे, रोग हमसे दूर भागते चले जाएंगे परंतु अगर स्वच्छता को कम से कम महत्व अगर दी गयी तो रोग एवं बिमारी का प्रकोप चारों ओर फैलता चला जाएगा। इससे ना केवल देश का पतन आरंभ हो जाएगा बल्कि देश का युवा कमजोर, दुर्बल एवं बिमार हो जाएगा।

स्वच्छता की एक लहर चारों ओर,
देश करोगा तरक्की चारों ओर,
होगी खुशीयाली चारों ओर,
नाम होगा देश का तभी चारों ओर ॥

3. स्वच्छता एक रोग प्रतिरोधक अवतार

किसी भी व्यवहार का अवतार तक पहुंचना वह स्थिति है कि उसके निर्वाह मात्र से चारों ओर सुद्धिकरण एवं पारस्परिक तरक्की के भाव प्राय: उत्पन्न होने लग जाए तथा बिना उसके निर्वाह करना अत्यंत कठिन हो जाए। इसका आचरण हमें हमारे घर से शुरू कर पूर्ण देश तक पहुंचाना है इसका एक फ्लो चाट्र नीचे प्रस्तुत है।

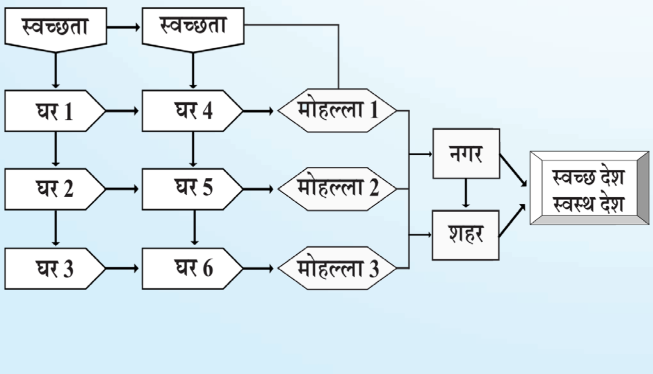

उपरोक्त चार्ट से यह सिद्ध होता है कि यदि हर एक घर में स्वच्छता लाई जाए तो धीरे-धीरे यह स्वरूप ना केवल गली मोहल्ले में बल्कि संपूर्ण देश में फैलकर पूर्ण स्वच्छ एवं स्वस्थ देश को अग्रसर करेगा निरंतर।

4. स्वच्छता से रोगों का अंत

आज वर्तमान में कोरोना जैसी गंभीर बिमारियों से लड़ने का एकमात्र उपाय है, स्वयं को स्वस्थ रखें तथा अपने आस-पास के वातावरण को भी स्वस्थ रखें। स्वच्छता ना केवल रोगों को हमसे दूर करेगा बल्कि धीरे-धीरे हमें ज्ञात होगा कि इससे रोगों का अंत होने लगा है। पर इसको पूर्ण रूप से लागू करने हेतु यह व्यवहार चारों ओर प्रयोग में लाना होगा तथा हमें हमारे देश को रोग मुक्त बनाना होगा।

है यह जन-जन का नारा,
स्वच्छ हो अब देश हमारा,
करेंगे देश को स्वच्छ चारों ओर,
रहेगा रोग मुक्त देश हर ओर।

5. उपसंहार

अंत में किसी भी वस्तु को लाना आसान है पर उस वस्तु को हमेशा एकसा रखना बहुत कठिन है, अर्थात स्वच्छता कोई एक या दो दिन का विषय नहीं है अपितु यह तो प्रत्येक दिन का आचरण है जिसे निहित कर ही रोग मुक्त देश की कल्पना की जा सकती है। इसकी शुरूआत बचपन से स्कूलों एवं घरों से दी जानी चाहिए, तत्पश्चात उसे निरंतर प्रयोग में लाने पर देश ना केवल स्वच्छ, साफ और सुंदर दिखेगा बल्कि देश रोग मुक्त होकर आंतरिक रूप से स्वस्थ बनेगा।

जय हिंद जय भारत ❑

देश का पहला वित्तिय घोटाला और जौनपुर डोभी कनेक्सन

✍ **राजेन्द्र प्रसाद सिंह**
आश्रित – कुमार शाल्व रघुवंशी
वरिष्ठ विधि अधिकारी
निगमित कार्यालय, नोएडा

पंडित नेहरू 1957 के दूसरे आम चुनाव फुलपुर से सांसद बने, तब जौनपुर जिले की 2 बिहाग सभा मछलीशहर और गडवारा फुलपुर में ही आती थी। देश की आजादी 1947 में मिलने के बाद से ही घोटालों का दौर शुरू हो गया था। 1948 में जीप घोटाला 1951 में साइकिल आयात घोटाला, 1956 का BHU काण्ड घोटाला और 1958 का पहला वित्तिय घोटाल मूंदड़ा कांड। चर्चित मूंदड़ा काण्ड में उस समय के वित्तमंत्री और संविधान सभा के सदस्य टी.टी. कृष्णमचारी को अपने पद से त्याग पत्र देना पड़ा था और नेहरू जी को अपने प्रधानमंत्रित्व काल में पहली बार वित्तमंत्री के रूप में 1958 का मायूसी भरा बजट पेश करना पड़ा था। मूंदड़ा में उस समय सरकारी तंत्र का उपयोग करके भारतीय जीवन बीमा को अपनी संदेहास्पद कंपनियों के शेयर उंचे दामों पर खरीदने पर मजबूर किया। जिसकी वजह से LIC को करोड़ों रूपये का नुकसान हुआ। इस काण्ड का खुलासा उस समय जौनपुर डोभी क्षेत्र के मुर्खा गांव निवासी बाबू गिरजा शरण सिंह 24 जून, 1957 को मूंदड़ा को गिरफ्तार करके किया था। जो उस समय कलकत्ता की आर्थिक अपराध शाखा के प्रमुख थे, जो उस समय एक इन्सपेक्टर (कोतवाल) का पद हुआ करता था। गिरजा शरण सिंह के सामने मूंदड़ा ने कुबेर का खजाना खोल दिया, परंतु कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार बाबू गिरजा शरण सिंह को मूंदड़ा जैसे धन्ना सेठ विचलित नहीं कर पाया। इस मुद्दे को उस समय के ईमानदार सांसद और नेहरू के दामाद फिरोज गांधी जो रायबरेली से पहली बार सांसद बनवाए गये थे, शितकालीन सत्र में उठाया, जिसके कारण नेहरू काफी दबाव में आ गये और वित्तमंत्री कृष्णामचारी संसद में कोई संतोष जनक उत्तर नहीं दे पाये। इस केश को तब भारी दबाव में कलकत्ता और दिल्ली में न चलाकर बम्बई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधिश एम. सी. छागला की कोर्ट में चलाया गया। छागला जी बाद के वर्षों में कई देशों के राजदूत/उच्चायुक्त रहते हुए अंतरराष्ट्रीय न्यायालय हेग में भारत के पहले न्यायाधिश बने और बाद में देश के चौथे शिक्षामंत्री/विदेश मंत्री बने। भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब किसी घोटाले की सुनवाई जनता के सामने कोर्ट रूम के बाहर लाउडस्पीकर लगा कर की गई। पूरी सुनवाई 24 दिन में पूरी करके न्यायमूर्ति छागला ने उस समय के कानून के हिसाब से मात्र 2 वर्ष की सजा सुनाई। वित्तमंत्री कृष्णामचारी, वित्त सचिव एच एम पटेल और LIC के उच्च अधिकारियों को जब फटकार लगाई तब बाहर जनता ने खूब तालियां पीटी। इस काण्ड में कांग्रेस के बड़े नेताओं के संल्लिपत होने के कारण वित्तमंत्री इस्तीफे के बाद केश को बंद कर दिया गया। बाद में कई घोटाले से अर्जित धन से कृष्णामचारी T.T.K. ग्रुप के मुखिया बने आज उनका परिवार देश के बड़े उद्योगपतियों के श्रेणी में आता है। बाबू गिरजाशरण सिंह एक सामान्य जीवन जीते हुए क्षेत्र के लोगों के लिए आदर्श बने। संपूर्ण घटना क्रम वो इतिहास में (रिकार्ड) बाबू गिरजा शरण सिंह का जिक्र कहीं नहीं है। परंतु न्यायमूर्ति छागला ने उनके कार्य को देखते हुए फैसले में उनके सम्मान में टिप्पणी करते हुए लिखा ''जो कार्य पुलिस के प्रथम श्रेणी (पुलिस अधीक्षक) के अधिकारी नहीं कर सके उस कार्य को विभाग के निचले तबके के अधिकारी करके विधायिका और कार्यपालिका को आईना दिखाया।''

बाबू गिरजा शरण सिंह अवकाश प्राप्त करने के बाद (1970 के आस-पास) जौनपुर डोभी के पी.पी. कॉलेज (कर्रा कॉलेज) प्रबंधक बनने के बाद भी घोर ईमानदारी और कर्तव्य का बोध जनता को कराया। जब किसी दिन रात्रि में वित्तीय जोड़ घटाने में कुछ रूपयों के अंतर पर सुबह का इंतजार किए बिना रात को ही लालटेन लेकर 4 किलोमीटर दूर कॉलेज पर पैदल ही पहुंचकर उस वित्तिय गड़बड़ी को सही किए। ❑

सत्यनिष्ठा के साथ भारत को आत्मनिर्भर बनाने में महिलाओं की भूमिका

✍ **ऋतुराज बोरा**
वरिष्ठ सहायक, सामग्री विभाग
दुलियाजान

"नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में " ।
- जयशंकर प्रसाद

प्रस्तावना - प्राचीन युग से ही हमारे समाज में महिलाओं का विशेष स्थान रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवीतुल्य माना गया है। हमारी धारणा रही है कि देव शक्तियाँ वहीं पर निवास करती है जहाँ पर समस्त नारी जाति की प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। भारतीय संस्कृति में महिला को देवी लक्ष्मी का दर्जा दिया गया है। अगर, हम इक्कीसवीं सदी की बात करें तो महिलाएं हर कार्यक्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है चाहे वो राजनीति, बैंक, खेल, विद्यालय, पुलिस, रक्षा क्षेत्र, खुद का कारोबार हो या आसमान में उड़ने की अभिलाषा हो। यह बात तो सौ प्रतिशत सच है कि भारतीय समाज में महिला को देवी लक्ष्मी समान पूजा जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति और भूमिका – हम सभी जानते हैं कि हमारा देश हिन्दुस्तान पूरे विश्व में अपनी अलग रीति रिवाज के लिए प्रसिद्ध है। भारत में प्राचीन काल से ही यह परंपरा रही है कि यहाँ महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है। भारत वह देश है जहाँ महिलाओं की सुरक्षा और इज्जत का खास ख्याल रखा जाता है। आधुनिक युग में महिला पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी है। वे राष्ट्रपति के दफ्तर से लेकर जिला स्तर की योजनाओं का आधार बन चुकी हैं। महिलाओं के बिना दिनचर्या की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरुषों के समान, स्वतंत्र, गौरवमयी जीवन जीने का हक है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं एवं पुरूषों में जमीन आसमान का फर्क है जबकि शहरी क्षेत्र ऐसा नहीं हैं। इसका कारण है गांव में महिलाओं की कम साक्षरता दर।

आज का युग परिवर्तन का युग है। भारतीय नारी की दशा में भी अभूतपूर्व परिवर्तन देखा जा सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक समाज सुधारकों समाजसेवियों तथा हमारी सरकारों ने नारी उत्थान की ओर विशेष ध्यान दिया है तथा समाज व राष्ट्र के सभी वर्गों में इसकी महत्व को प्रकट करने का प्रयास किया है। फलतः आम नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। विज्ञान व तकनीकी सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। उसने समाज व राष्ट्र को यह सिद्ध कर दिखाया है कि शक्ति अथवा क्षमता की दृष्टि से वह पुरुषों से किसी भी भाँति कम नहीं है।

सत्यनिष्ठा के साथ भारत को अत्मनिर्भर बनाने में महिलाओं की भूमिका - नव जीवन में ईमानदारी और सच्चाई के गुणों का होना आवश्यक है। अक्सर देखा गया है जो इन्सान सच्चाई की राह पर चलता है वह ईमानदार भी होता है तथा अपने कर्तव्यों के लिए भी उतना ही जागरूक होता है जितना कि वह अपने अधिकारों को लेकर होता है। हम समाज के बीच रहते हैं, हमारा नित्य कई लोगों से सम्पर्क होता है। यदि हम दूसरों के साथ परस्पर अच्छा व्यवहार करेंगे तो निश्चय ही वे भी हमारे प्रति आशावान बनेंगे तथा हमारी मदद भी करेंगे तथा आपसी रिश्ते भी अच्छे होंगे । एक सच्चा ईमानदार इन्सान स्पष्टवादी होता है। उसका व्यवहार दिखावे की बजाय स्वप्रेरित होता है। उनके व्यवहार भाषण में इनके ये गुण स्पष्ट देखे जा सकते हैं । यदि एक व्यक्ति ईमानदारी और सच्चाई की राह पर चलता है, तो समाज में हर कोई उसका सम्मान करेगा तथा वक्त पड़ने पर वे उनके साथ खड़े नजर आएंगे । वहीं दूसरी तरफ स्वार्थी, झूठे और चोर प्रवृत्ति के व्यक्ति कभी किसी का भला नहीं चाहते हैं वे हमेशा औरों को पीड़ित ही देखना चाहते हैं ।

भारत प्राचीन काल से संसाधनों का देश रहा है। स्वतंत्रता के बाद

महात्मा गांधी ने भारत की गरीबी और भुखमरी को देखते हुए देश को आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा था, लेकिन उस स्थिति में सुविधा की कमी के कारण यह संभव नहीं था। लेकिन जहाँ तक संभव हुआ लोगों ने खुद को आत्मनिर्भर बनाया । आत्मनिर्भर भारत बनने का मतलब है कि हमारे देश को हर क्षेत्र में खुद पर निर्भर होना पड़ेगा। भारत को देश में ही सबकुछ बनाना होगा। इस आत्मनिर्भर अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत में भारत के संसाधनों से बने सामानों का उपयोग करना है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत में आत्मनिर्भर उद्योगों में सुधार लाना और युवाओं के लिए रोजगार, गरीबों के लिए पर्याप्त भोजन है।

भारत में साक्षरता दर को सामाजिक आर्थिक प्रगति का न्याय करने के लिए साधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। वैसे, पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच एक महत्वपूर्ण असमानता है। 2021 की जनगणना में - जहाँ 80.9 पुरुष साक्षर थे वहीं केवल 64.60% महिलाएँ ही साक्षर मानी जाती थी।

महिला सशक्तिकरण एक आवश्यक चीज है। सरकार या आबादी को इस पर एक विचार को नकारना नहीं चाहिए। महिला सशक्तीकरण का मकसद महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है, आर्थिक रूप से समान सामाजिक आर्थिक स्थिति के साथ स्थिर बनाना है। वेतन अंतर एक आवश्यक मुद्दा है। भारत में महिला केवल 62% कमाती है जो उनके पुरूष सहकर्मी समान काम के लिए कमा रहे हैं। वे ज्यादातर समय बराबर स्थिति से वंचित रहे हैं। जरूरत पहले किसी के विचारों में क्रांति लाने की है।

भारत सरकार और महिलाओं के मंत्रालय द्वारा महिलाओं की स्थितियों को बढ़ाने के लिए विभिन्न पहल की गई। वे हो सकते हैं – बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ और चलन, वन-स्टॉप सेन्टर, महिला हेल्पलाइन, नारी शक्ति पुरुष, महिला-ए-हाट आदि जैसी कई योजनाएं हैं। कठिन हिस्सा इसका व्यावहारिक निहितार्थ या निष्पादन है।

महिला सशक्तिकरण आज सवालों के घेरों में है। उन्हें सशक्त बनाने के लिए जानने कि तरीका भी उन्हें बेरोजगार जानने से संबंधित है? पितृसत्ता, आइए इस विचार पर काबू पाएं। हम भारत का सपना देखते हैं, न केवल सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक हैं बल्कि महान महिलाओं के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक राष्ट्र है जो इतिहास बनाएगी।

यदि हमारा देश भारत आत्मनिर्भर हो जाता है तो देश को इससे कई लाभ मिलेंगे जो लोगों और देश की प्रगति में बहुत सहायक होंगे। जैसे :-

1) आत्मनिर्भर भारत हमारे देश में उद्योगों की संख्या में वृद्धि करेगा।
2) हमारे देश को दूसरे देशों से कम मदद लेनी होगी।
3) हमारे देश में रोजगार के अधिक अवसर पैदा करने होंगे।
4) देश में बेरोजगारी के साथ गरीबी से मुक्ति में मदद मिलेगी।
5) भारत की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत होगी।
6) देश में स्वदेशी सामान का उत्पादन करके देश की प्रगति को शीर्ष पर ले जाने में मदद करेगा।

उपसंहार - कुदरत ने स्त्री पुरुष को समान बनाया है। पुरुष को ताकतवर और महिलाओं को कमजोर समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। क्या महिलाओं के बिना यह दुनिया चल सकती है। भारत देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमें महिलाओं की साक्षरता को बढ़ाना होगा जब 100% लड़कियाँ, महिलाएं साक्षर होंगी तो वो अन्याय होने पर अपनी मदद खुद कर सकती हैं। सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत 20 लाख करोड़ रूपये विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज की घोषणा की है। जब पुरुषों के साथ-साथ महिला भी सशक्त बनेगी तब वह दिन ज्यादा दूर नहीं है जब हमारा देश विश्व के विकसित देश में से एक होगा। ❑

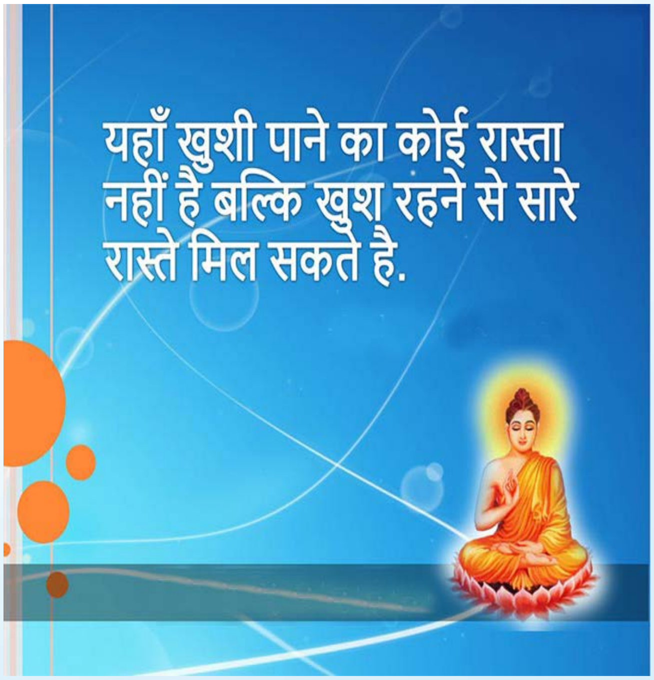

ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय को वर्ष 2020 – 21 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय राजभाषा चल वैजयंती शील्ड पुरस्कार

दिनांक 09.12.2021 को सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी कार्यालय को वर्ष 2020-21 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए, श्री बदरी यादव, उप निदेशक (प्र.) एवं कार्यालय प्रमुख क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी तथा श्री एस पी सिंह, अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम) एवं कार्यकारी निदेशक व रिफाइनरी प्रमुख, इंडियन ऑयल गुवाहाटी रिफाइनरी के कर कमलों द्वारा प्रतिष्ठित शील्ड प्रदान की गई। पाइपलाइन मुख्यालय द्वारा प्रसंगित शील्ड प्राप्त करना इसकी विशेष उपलब्धि है। पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी कार्यालय की ओर से श्री संदीप गोस्वामी, मुख्य महाप्रबंधक (पा.ला.से.) प्रमुख तथा श्री माधुर्य बरुआ, महाप्रबंधक (प्रशा. एवं क सं.) ने प्रतिष्ठित विद्वजनों की उपस्थिति में शील्ड ग्रहण की।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में ऑनलाइन हिन्दी ई-टूल्स कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 22 जून, 2021 को एक ऑनलाइन हिन्दी ई-टूल्स कार्यशाला का आयोजन किया गया। पाइपलाइन के मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं), श्री संदीप गोस्वामी के साथ-साथ पाइपलाइन के विभिन्न उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला की शुरूआत में उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ. विजय मोहन बरेजा ने ऑनलाइन कार्यशाला में उपस्थित हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का औपचारिक स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य तथा कार्यशाला के विषय 'तकनीक का मिलेगा साथ तो हिंदी में बनेगी बात के संबंध में रूपरेखा रखी। पाइपलाइन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं), श्री संदीप गोस्वामी ने इस कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन करते हुए कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान अनुसार पाइपलाइन मुख्यालय में हम नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं। कार्यालयी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की जानकारी देना कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य होता है। अपनी बात को आगे रखते हुए उन्होंने कहा कि हमारे बीच श्री अतनु चट्टोपाध्याय, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), एचपीसीएल, कोलकाता बतौर फैकल्टी आमंत्रित हैं और मुझे उम्मीद है उनके मार्ग दर्शन से सभी प्रतिभागियों को हिन्दी ई-टूल्स के बारे में विस्तृत जानकारी मिलेगी। हिंदी सॉफ्टवेयर तथा अलग-अलग ऐप्स की मदद से पाइपलाइन मुख्यालय तथा पम्प स्टेशनों के कार्मिक कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप तथा टेब इत्यादि पर अपना काम हिन्दी के साथ-साथ स्थानीय भाषा में भी कर पाएंगे।

महाप्रबंधक (प्रशासन एवं कर्मचारी संबंध), श्री माधुर्य बरुआ ने इस शुभ अवसर पर हिन्दी ई-टूल्स संबंधी कार्यशालाओं के बार-बार आयोजन पर बल दिया तथा राजभाषा हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपनी शुभकामनाएं अभिव्यक्त कीं।

श्री अतनु चट्टोपाध्याय ने हिन्दी ई-टूल्स के बारे में वीडियो तथा प्रस्तुतिकरण की सहायता से अपनी बात रखी। अपने प्रस्तुतिकरण को रूचिपरक बनाने के लिए उन्होंने क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जिसे प्रतिभागियों द्वारा बहुत पसंद किया गया। इससे पूर्व उन्होंने एम एस वर्ड, एम एस एक्सल तथा एम एस पावर प्वाइंट पर हिन्दी में काम करने, किसी दस्तावेज को हिंदी से अंग्रेजी अथवा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद करने, बिना टंकक की मदद से गूगल वॉयस टाइपिंग के बारे में विस्तार से बताया। कार्यशाला का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विजय मोहन बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 19 अगस्त 2021 को एक उच्चस्तरीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री संदीप गोस्वामी, मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) के साथ-साथ पाइपलाइन के विभिन्न उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस महत्वपूर्ण हिंदी कार्यशाला में भाग लिया। सभागार में उपस्थित हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का औपचारिक स्वागत करते हुए श्री माधुर्य बरुआ, महाप्रबंधक (प्रशासन एवं औ.सं.) कहा कि कार्यालय द्वारा हरेक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है इससे कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में आने वाली कठिनाइयों को समझने तथा उन्हें दूर करने का अवसर मिलता है। इसका लाभ यह मिलता है कि कार्यालय के हिंदी पत्राचार में वृद्धि होती है तथा कार्यालय में हिंदी में काम करने का माहौल बनता है। इससे पूर्व कार्यशाला की शुरूआत में उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ विजय मोहन बरेजा ने हिंदी कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा ऐसी कार्यशालाओं की उपयोगिता के बारे में बताया।

पाइपलाइन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं), श्री संदीप गोस्वामी ने इस कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन करते हुए कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान अनुसार पाइपलाइन मुख्यालय में हम नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं। कार्यालयी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की जानकारी देना कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य होता है । अपनी बात को आगे रखते हुए उन्होंने कहा कि जहां तक पाइपलाइन मुख्यालय का प्रश्न है हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी को लेकर हमेशा गंभीरता से प्रयास किये जाते रहते हैं व इसमें हमें अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों का योगदान सदैव मिलता रहता है। इसी वजह से हमें विभिन्न मंचों पर पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे हैं। श्री बदरी यादव उप निदेशक (प्र.) जो कि बतौर फैकल्टी आमंत्रित किए गए थे उनका विशेष आभार करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा, "मुझे अत्यंत खुशी है कि आज हमारे बीच बहुत ही गुणी तथा अनुभवी वक्ता श्री बदरी यादव जी शामिल हैं जिन्हें राजभाषा हिंदी में काम करने का लंबा अनुभव प्राप्त है। आज उनके विचारों से हम सभी को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा"।

श्री बदरी यादव ने उपस्थित हुए कार्मिकों को राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न प्रावधानों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने रुचिपरक ढंग से अपनी बात रखते हुए पूर्वोत्तर भारत में भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को संदर्भ साहित्य प्रदान किया गया। डॉ. विजय मोहन बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

ऑयल, कोलकाता एवं के जी बी एवं बी ई पी कार्यालय में राजभाषा उत्सव 2021

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय तथा के जी बी एवं बी ई पी कार्यालय में दिनांक 01.09.2021 से 30.09.2021 तक राजभाषा उत्सव मनाया गया। माह भर के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कई प्रकार की ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी कार्टून बनाओ प्रतियोगिता, हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी स्लोगन लेखन प्रतियोगिता तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। माह का उद्घाटन कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक (को.का.) श्री ए रॉय चौधुरी तथा मुख्य महाप्रबंधक (के जी बी एवं बी ई पी) श्री अवशीष पॉल, द्वारा माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से किया गया। उद्घाटन के दौरान कार्यालय सभी अनुभागाध्यक्ष सहित अधिकारी तथा कर्मचारीगण उपस्थित हुए। वैश्विक महामारी कोरोना के चलते इस बार राजभाषा उत्सव के कार्यक्रम के आयोजन को सीमित किया गया तथा उद्घाटन एवं समापन के समय कोविड 19 के नियमों का पालन किया गया। समापन के दौरान कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक ने प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने पर सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन डॉ. बी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

कोलकाता कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन (09.09.2021)

ऑयल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता कार्यालय में राजभाषा उत्सव 2021 मनाए जाने के दौरान दिनांक 09 सितम्बर 2021 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री ए रॉय चौधुरी, मुख्य महाप्रबंधक (को. का.) के साथ-साथ कोलकाता कार्यालय के विभिन्न कर्मचारियों ने इस हिंदी कार्यशाला में भाग लिया। सभागार में उपस्थित हुए सभी कर्मचारियों का औपचारिक स्वागत करते हुए उप महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ. विजय मोहन बरेजा ने हिंदी कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा ऐसी कार्यशालाओं की उपयोगिता के बारे में बताया । उन्होंने बताया कि कार्यालय द्वारा हरेक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है इससे कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में आने वाली कठिनाइयों को समझने तथा उन्हें दूर करने का अवसर मिलता है। इसका लाभ यह मिलता है कि कार्यालय के हिंदी पत्राचार में वृद्धि होती है तथा कार्यालय में हिंदी में काम करने का माहौल बनता है।

कोलकाता कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं), श्री ए रॉयचौधुरी ने इस कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन करते हुए कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान अनुसार कोलकाता कार्यालय में हम नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं। हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी को लेकर हमेशा गंभीरता से प्रयास किये जाते रहते हैं व इसमें हमें अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों का योगदान सदैव मिलता रहता है। इसी वजह से हमें विभिन्न मंचों पर पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे हैं। श्री निर्मल दुबे, उप निदेशक (का.) जो कि बतौर फैकल्टी आमंत्रित किए गए थे उनका विशेष आभार करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा, “मुझे अत्यंत खुशी है कि आज हमारे बीच बहुत ही गुणी तथा अनुभवी वक्ता श्री निर्मल दुबे जी शामिल हैं जिन्हें राजभाषा हिंदी में काम करने का लंबा अनुभव प्राप्त है। आज उनके विचारों से हम सभी को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा”।

श्री निर्मल दुबे ने उपस्थित हुए कार्मिकों को राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न प्रावधानों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने अपनी बात रखते हुए भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को संदर्भ साहित्य प्रदान किया गया। डॉ. विजय मोहन बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ ।

कोलकाता कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन (01.12.2021)

ऑयल इंडिया लिमिटेड, के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01 दिसम्बर 2021 को एक उच्चस्तरीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री ए रॉय चौधुरी, मुख्य महाप्रबंधक (को.का.) तथा कार्यालय के कुल 14 अधिकारी इस महत्वपूर्ण राजभाषा कार्यशाला में उपस्थित हुए । सभी अधिकारियों का औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. वी एम बरेजा, उपमहाप्रबंधक (रा.भा.) ने कहा कि कोलकाता कार्यालय द्वारा हरेक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है इससे कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में आने वाली कठिनाइयों को समझने तथा उन्हें दूर करने का अवसर मिलता है तथा कार्यालय में हिंदी में काम करने का माहौल बनता है। उन्होंने "हिंदी हिट है" विषय पर केंद्रित कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधानों के अनुरूप कोलकाता कार्यालय में हम प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं। कार्यालयी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की जानकारी देना कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य होता है। जहां तक कोलकाता कार्यालय का सवाल है इस कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी को लेकर हमेशा गंभीरता से प्रयास किये जाते रहते हैं व इसमें हमें अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों का योगदान सदैव मिलता रहता है। इसी वजह से हमें विभिन्न मंचों पर पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे हैं। प्रस्तुतिकरण देते हुए उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976,अन्य सम्बंधित प्रावधानों तथा गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा निर्देशों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। इस दौरान प्रतिभागियों को राजभाषा हिंदी में काम करने का अभ्यास कराया गया तथा भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा की प्रगति व उसके समक्ष आने वाली चुनौतियों के बारे में चर्चा भी की गई।

कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को संदर्भ साहित्य प्रदान किया गया व धन्यवाद ज्ञापन करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

पम्प स्टेशन सं. 3 जोरहाट कार्यालय में उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन "हिंदी हिट है"

ऑयल इंडिया लिमिटेड, के पम्प स्टेशन संख्या 3, जोरहाट कार्यालय में दिनांक 22 नवम्बर 2021 को एक उच्चस्तरीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री ए के ए खान, महाप्रबंधक (पी एस 3) प्रभारी के साथ-साथ जोरहाट कार्यालय के कुल 15 अधिकारियों ने इस महत्वपूर्ण राजभाषा कार्यशाला में भाग लिया। सभागार में उपस्थित हुए सभी अधिकारियों का औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. वी एम बरेजा, उपमहाप्रबंधक (रा.भा.) ने कहा कि कार्यालय द्वारा हरेक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है इससे कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में आने वाली कठिनाइयों को समझने तथा उन्हें दूर करने का अवसर मिलता है। इसका लाभ यह मिलता है कि कार्यालय के हिंदी पत्राचार में वृद्धि होती है तथा कार्यालय में हिंदी में काम करने का माहौल बनता है। उन्होंने "हिंदी हिट है" विषय पर केंद्रित कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान अनुसार पाइपलाइन मुख्यालय में हम नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं। कार्यालयी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की जानकारी देना कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य होता है। अपनी बात को आगे रखते हुए उन्होंने कहा कि जहां तक पाइपलाइन मुख्यालय का प्रश्न है हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी को लेकर हमेशा गंभीरता से प्रयास किये जाते रहते हैं व इसमें हमें अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों का योगदान सदैव मिलता रहता है। इसी वजह से हमें विभिन्न मंचों पर पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे हैं। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि श्री संदीप गोस्वामी, महाप्रबंधक (पाला से.) एवं अध्यक्ष संगठन राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा बैठक में सुझाए गए अनुसार आज इस राजभाषा हिंदी कार्यशाला का आयोजन जोरहाट कार्यालय में किया गया है। डॉ. बरेजा ने प्रस्तुतिकरण देते हुए उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, अन्य सम्बंधित प्रावधानों तथा गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा निर्देशों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। इस दौरान प्रतिभागियों को राजभाषा हिंदी में काम करने का अभ्यास कराया गया तथा भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा की प्रगति व उसके समक्ष आने वाली चुनौतियों के बारे में चर्चा भी की गई।

कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को संदर्भ साहित्य प्रदान किया गया व धन्यवाद ज्ञापन करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय में “राजभाषा शपथ ग्रहण” समारोह

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हिंदी दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में आवासी मुख्य कार्यपालक भवन परिसर में राजभाषा शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें श्री प्रशांत बोरकाकोती, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल ने सभी उपस्थित कार्यकारी निदेशक, मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक एवं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई। इसके अतिरिक्त, दुलियाजान के अन्य स्थानों पर स्थित ऑयल के विभिन्न कार्यालयों में विभागाध्यक्ष द्वारा राजभाषा शपथ ग्रहण समारोह में अपने-अपने कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा पाठ कराया गया। ज्ञात हो कि संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है। इस पावन दिवस की स्मृति में पूरे देश में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस वर्ष पहली बार के लिए 14 सितम्बर हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा लेने का निर्देश दिया गया था, ताकि संविधान द्वारा दिए गए दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

ऑयल इंडिया लिमिटेड राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार को प्रभावी एवं व्यापक बनाने के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। राजभाषा हिंदी के प्रति रूझान पैदा करने तथा अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु अपने कार्मिकों को सक्षम बनाने के उद्देश्य से ऑयल प्रत्येक वर्ष 01 सितंबर से 30 सितंबर तक राजभाषा महोत्सव के रूप में मनाती आयी है। राजभाषा महोत्सव के दौरान अधिकारियों तथा कर्मचारियों के तथा उनके आश्रितों के बीच विभिन्न रचनात्मक प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही है। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आज राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें अधिक संख्या में प्रतिभागियों ने अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की।

ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में राजभाषा महोत्सव- 2021 का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में 01.09.2021 से 30.09.2021 तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ राजभाषा महोस्तव-2021 मनाया जा रहा है। इस अवसर पर दिनांक 02.09.2021 को ऑयल के क्षेत्र सम्मेलन कक्ष, जनरल ऑफिस में एक औपचारिक उद्घाटन कार्यक्रम सह श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त उद्घाटन कार्यक्रम तथा प्रतियोगिता में क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान स्थित विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों तथा राजभाषा महोत्सव के आयोजन के उद्देश्य के बारे में उपस्थित सभी को अवगत कराया। उन्होंने राजभाषा महोत्सव-2021 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रियतापूर्वक भाग लेने हेतु सभी से आग्रह किया। इस वर्ष राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशानुसार "सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत" मंत्र को चरितार्थ करते हुए आगामी 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में राजभाषा प्रतिज्ञा लेने का निर्णय लिया गया।

कोविड-19 महामारी के कारण, इस वर्ष कुछेक कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से करने का निर्णय लिया गया। राजभाषा महोत्सव के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों के लिए अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताएं, यथा- श्रुतलेख प्रतियोगिता, ऑनलाइन टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता तथा स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, उपस्थित प्रतिभागियों के लिए एक राजभाषा कार्याशाला का भी आयोजन किया गया। राजभाषा कार्यशाला का संचालन श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री दिगंत डेका, हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया। कार्यशाला में सभी कार्मिकों को कार्यालयीन काम काज में राजभाषा हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करने हेतु व्यवहारिक ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी बातों से अवगत कराया गया

मोरान ऑयल क्षेत्रः

राजभाषा महोत्सव-2021 के दौरान मोरान ऑयल क्षेत्र में एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री सृष्टि दास, मुख्य महाप्रबंधक (मोरान), पश्चिमी परिसंपत्ति के मार्गदर्शन में आयोजित उक्त कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रियता से भाग लिया। उपस्थित सभी प्रतिभागियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजयी प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

डिगबोई ऑयल क्षेत्र:

राजभाषा महोत्सव-2021 के दौरान डिगबोई ऑयल क्षेत्र में एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री पारस ठाकुर, सतह प्रबंधक (पूर्वी), पूर्वी परिसंपत्ति के अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रियता से भाग लिया। उपस्थित सभी प्रतिभागियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजयी प्रतिभागियों को उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के कर कमलों से आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए गए।

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा महोत्सव-2021 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 06.10.2021 (बुधवार) को क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के क्षेत्र सम्मेलन कक्ष, जनरल ऑफिस में किया गया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड में राजभाषा महोत्सव-2021 का आयोजन दिनांक 01 सितंबर से 30 सितंबर 2021 तक किया गया। इस राजभाषा महोत्सव के दौरान विभिन्न वर्गों में अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों के लिए भी अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं यथा:- श्रुतलेख, हिन्दी टिप्पण/आलेखन, निबंध लेखन, राजभाषा ज्ञान तथा स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इसी कड़ी में ऑयल इंडिया लिमिटेड के अधीनस्थ कार्यालय पूर्वी परिसंपत्ति, डिगबोई और पश्चिमी परिसंपत्ति, मोरान में भी हिन्दी माह समारोह 2021 का आयोजन किया गया ।

समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रति उनके लगाव को हम हृदय से सराहना करते हैं। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि कार्यालय में यथासंभव खुद भी हिंदी में काम करें और औरों को भी प्रेरित करें।

तत्पश्चात सभा को संबोधित करते हुये राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री राजीव कुमार बरा ने सर्वप्रथम पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उसके बाद अपने विचारों को रखते हुए कहा कि हिन्दी भारत की सर्वाधिक बोली व समझी जानेवाली व्यवहारिक भाषा होने के कारण राजभाषा के पद पर सुशोभित है। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री बदरी यादव, उप निदेशक (का.) व कार्यालय प्रमुख, राजभाषा विभाग, गुवाहाटी ने कहा कि भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों को शाब्दिक रूप में दूसरों तक आसानी से पहुंचा पाते हैं। हिन्दी भाषा का विकास करने के लिए हम सब को मिलजुल कर दिल से प्रयास करना चाहिए । इसके लिए कार्यालयीन काम-काज में यथासंभव इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। ऑयल के आवासी कार्यपालक श्री प्रशांत बोरकाकोती ने कहा कि राजभाषा हिंदी पर हमें गर्व होना चाहिए और हम सब को मिलकर इसके विकास के लिए काम करना चाहिए। आज यह संकल्प लें कि हम यथासंभव अपना हर कार्यालयीन काम हिंदी में करेंगे।

कार्यक्रम के अंत में इस माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी अधिकारी, कर्मचारी तथा उनके आश्रितों के बीच पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसके साथ ही ऑयल के क्षेत्रीय कार्यलयों और विभागों के प्रतिष्ठित अंतर क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं अंतर विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेता क्षेत्रों/विभागों को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। इसके अलावा नराकास-दुलियाजन के विजेता सदस्य कार्यलयों को ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया। प्रतियोगितओं के दौरान निर्णायक की भूमिका निभानेवालों को भी भेंट स्वरूप स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक -जन संपर्क (विभागाध्यक्ष) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संचालक श्री हरेकृष्ण बर्मन द्वारा कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की गई।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नराकास, दुलियाजान की 39वीं बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में दिनांक 24 मई, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 39वीं बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने की। दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने विभिन्न कार्यालयों से जुड़े सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया और विभिन्न कार्यालयों के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित प्राप्त रिपोर्टों की प्रस्तुतीरण के बारे में उपस्थित सभी को इसकी जानकारी दी। श्री दिगंत डेका, हिंदी अधिकारी ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित समेकित तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी ने बैठक में हिस्सा लिया। उन्होंने सभी कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की और उचित कार्रवाई हेतु सभी कार्यालयों को आवश्यक निदेश दिए। आज के प्रतिकूल परिस्थिति में भी ऑयल इंडिया लिमिटेड ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक का सफल आयोजन किया, जो एक प्रशंसनीय कदम है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने कहा कि हमारी ओर से नराकास बैठक समय पर आयोजित की जा रही है। इस बैठक में सदस्य कार्यालयों के अधिक संख्या में जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी में करें ताकि दूसरे कर्मचारी भी प्रोत्साहित होकर हिन्दी में काम करने का प्रयास करेंगे। श्री हरेकृष्ण बर्मन, सदस्य सचिव व उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 39वीं बैठक समाप्त हुई।

ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की 40वीं बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान की अध्यक्षता में दिनांक 09 नवंबर, 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 40वीं बैठक संपन्न हुई। श्री राजीव कुमार बरा, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठक में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री अरुणज्योति बरुवा, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन), ऑयल, श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने बैठक में उपस्थित होकर अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने विभिन्न कार्यालयों से उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। विभिन्न कार्यालयों के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित रिपोर्टों की समीक्षा की गई। श्री दिगंत डेका, हिंदी अधिकारी ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित समेकित तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी ने सभी कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की और उचित कार्रवाई हेतु सभी कार्यालयों को आवश्यक निदेश दिया गया। उन्होंने उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया कि प्रत्येक तिमाही में तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भरा जाए तथा उसकी एक प्रति नराकास, दुलियाजान को भी अवश्य प्रेषित करें। उन्होंने बैठक के सफल आयोजन के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड को धन्यवाद दिया।

श्री अरुणज्योति बरुवा, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन), ऑयल ने अपने भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हमें सकारात्मक कदम उठाना चाहिए। भारत देश बहुभाषी होने के बावजूद हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसका हम संपर्क भाषा के रूप में उपयोग करते आए हैं। उन्होंने सभी कार्यालयों के प्रतिनिधि से अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिंदी में करें।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री राजीव कुमार बरा, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल ने कहा कि हमारी अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की बैठक हमेशा समय पर आयोजित की जाती रही है। उक्त बैठक में सदस्य कार्यालयों से अधिक संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित करें। श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 40वीं बैठक समाप्त हुई।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में ऑनलाइन राजभाषा कार्यशाला आयोजित

(विकास और विश्वास की भाषा है हिंदी- डॉ. अच्युत शर्मा)

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान द्वारा दिनांक 23 जून, 2021 को अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों और नराकास सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के लिए ऑनलाइन के माध्यम से एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में श्री राजीव बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल, श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल के साथ-साथ ऑयल एवं नराकास, दुलियाजान के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यशाला में ऑनलाइन के माध्यम से मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अच्युत शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, मार्गदर्शक के रूप में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सराकर एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. कुल प्रसाद उपाध्याय, सहायक निदेशक (राजभाषा), तेजपुर विश्वविद्यालय ने भाग लिया। कार्यशाला की शुरूआत में श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने सभी अतिथियों एवं विभिन्न संस्थानों से जुड़े प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य की व्याख्या की।

राजभाषा कार्यशाला का उद्घाटन ऑयल इंडिया लिमिटेड के श्री राजीव बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि ऐसी कार्यशाला के द्वारा हमारे दैनन्दिन काम-काज में हिंदी का प्रयोग करते समय आने वाली कठिनाइयों को दूर करने में मदद मिलता है। कार्यशाला के दौरान ऑयल इंडिया लिमिटेड की छमाही गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' के 28वां अंक का उद्घाटन ऑनलाइन के माध्यम से किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में विराजमान डॉ. अच्युत शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय ने विकास और विश्वास की भाषा के रूप में हिंदी पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अपनी भाषा से समाज की उन्नति होती है। हिन्दी सीखना, सिखाना, बोलना और समझना तथा कार्यालय में काम करना भी राष्ट्र सेवा है। विशिष्ट वक्ता के रूप में विराजमान डॉ. कुल प्रसाद उपाध्याय ने कम्प्यूटरों पर हिंदी के प्रयोग के संबंध में सभी को अवगत कराया। उन्होंने कम्प्यूटरों पर हिंदी में काम करने के आसान तरीकों तथा उपकरणों के बारे में बताया। मार्गदर्शक के रूप में विराजमान श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने कार्यालयों में यथासंभव काम हिंदी में करने की अपील की। उन्होंने कहा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा ऑनलाइन के माध्यम से आयोजित राजभाषा कार्यशाला राजभाषा कार्यान्वयन के लिए एक प्रशंसनीय कदम है।

श्री त्रिदीब सैकिया, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

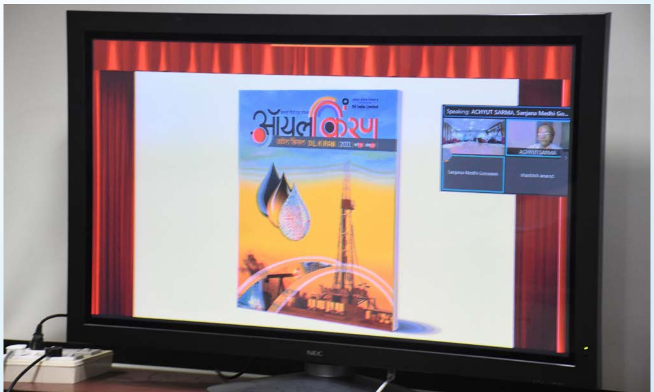

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान द्वारा दिनांक 9 दिसंबर 2021 को अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री राजीव कुमार बरा, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल ने श्रीमती आरती दास, महाप्रबंधक (मानव संसाधन-ज्ञानार्जन), ऑयल के साथ-साथ ऑयल के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में उक्त कार्यशाला का उद्घाटन किया। उक्त राजभाषा कार्यशाला में डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी, एसोसियेट प्रोफेसर (हिन्दी), तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि/वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री राजीव कुमार बरा, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल ने कहा कि ऐसी कार्यशाला के आयोजन से हमारे कार्यालय के काम-काजों में हिंदी के प्रयोग के दौरान आने वाली कठिनाइयों को दूर करने हेतु सार्थक कदम है। मुख्य वक्ता के रूप में विराजमान डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी, एसोसियेट प्रोफेसर (हिन्दी), तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने अपने सारगर्भित भाषण में कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के सरल प्रयोग और हिंदी भाषा में व्याकरण के महत्व पर प्रकाश डाला। श्रीमती आरती दास, महाप्रबंधक (मानव संसाधन-ज्ञानार्जन), ऑयल ने सभी प्रतिभागियों से आग्रह किया कि आज की कार्यशाला में मन लगाकर हिंदी के प्रयोग को सीखें और उसका प्रयोग अपने कार्यालय के कामों में करें। यह भी एक प्रकार से राष्ट्र सेवा ही है।

कार्यशाला की शुरूआत में श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य की संक्षिप्त व्याख्या की।

श्री दिगंत डेका, हिंदी अधिकारी, ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

ऑयल में हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान द्वारा हर वर्ष अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए सक्षम बनाने हेतु ऑयल इंडिया हायर सेकेंडरी स्कूल में हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षा के लिए कक्षा का आयोजन किया जाता है। इस कक्षा में ऑयल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ नराकास, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों से भी अधिकारी/ कर्मचारी भी भाग लेते हैं।

हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षा नवंबर, 2021 के सत्र के लिए इस वर्ष ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों से कुल 54 परीक्षार्थियों का नामांकन किया गया और सभी ने परीक्षा में भाग लिया।

''वही व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त कर पाता है जो आशावादी होता है।
जब तक किसी व्यक्ति के मन में आशा नहीं होगी, वह कोई काम नहीं कर सकेगा।''

- हेलेन

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

सरदार पटेल की कर्तव्यनिष्ठा

सरदार बल्लभ भाई पटेल अदालत में एक मुकदमे की पैरवी कर रहे थे। मामला बहुत गंभीर था। थोड़ी सी लापरवाही भी उनके क्लायंट को फांसी की सजा दिला सकती थी। सरदार पटेल जज के सामने तर्क दे रहे थे। तभी एक व्यक्ति ने आकर उन्हें एक कागज थमाया। पटेल जी ने उस कागज को पढ़ा। एक क्षण के लिए उनका चेहरा गंभीर हो गया। लेकिन फिर उन्होंने उस कागज को मोड़कर जेब में रख लिया। मुकदमे की कार्यवाही समाप्त हुई। सरदार पटेल के प्रभावशाली तर्कों से उनके क्लायंट की जीत हुई। अदालत से निकलते समय उनके एक साथी वकील ने पटेलजी से पूछा कि कागज में क्या था? तब सरदार पटेल ने बताया कि वह मेरी पत्नी की मृत्यु की सूचना का तार था। साथी वकील ने आश्चर्य से कहा कि इतनी बड़ी घटना घट गई और आप बहस करते रहे।"

सरदार पटेल ने उत्तर दिया, "उस समय मैं अपना कर्तव्य पूरा कर रहा था। मेरे क्लायंट का जीवन मेरी बहस पर निर्भर था। मेरी थोड़ी सी अधीरता उसे फांसी के तख्ते पर पहुंचा सकती थी। मैं उसे कैसे छोड़ सकता था? पत्नी तो जा ही चुकी थी। क्लायंट को कैसे जाने देता?"

ऐसे गंभीर और दृढ़ चरित्र के कारण ही वे लौहपुरुष कहे जाते हैं।